मूल्य : 20/-
घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17

वर्ष : ३
नवम्बर : २०१८, विक्रमी सम्वत् : २०७५
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११९, दयानन्दाब्द : १९५
अंक : ५

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

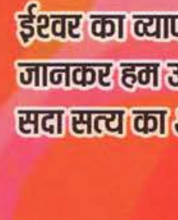
पं. जवाहर लाल नेहरू
(जन्म दिवस : 14 नव.)

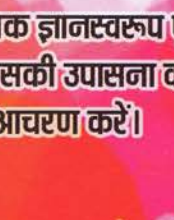
महात्मा हंसराज
(स्मृति दिवस : 15 नव.)

लाल लाजपत राय
बलिदान दिवस : 17 नव.)

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर 'अंध विश्वास निवारण कार्यक्रम' में आर्यजनों को संबोधित करते हुए आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी।

आर्य समाज राजपुरा टाउन पंजाब में आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी प्रवचन करते हुए।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्रीमती गायत्री मीना 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

व्यवस्थापक
ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMUL-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/06.06/2016-17

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : पर्वों का प्रकाश...	2
2.	महर्षि और आर्य समाज	3
3.	प्रजापते न त्वदेता...	4-5
4.	महाभारत और धर्म	6-7
5.	ईश्वर का नाम 'सच्चिदानन्द'...	8-9
6.	सत्य की राह पर चलें...	10
7.	अहिंसा परमो धर्मः	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12
9.	ऋग्वेद में वर्णित विषनाशक...	14
10.	आचमन मंत्रों की चर्चा	18
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : नीम में बड़े-बड़े गुण	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

पर्वों का प्रकाश : महर्षि निर्वाण दिवस

महर्षि दयानन्द जी ने दीपावली के दिन शरीर का त्याग कर संसार को सन्देश दिया था, 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतम् गमय। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना अध्यात्म, दर्शन, धर्म, शिक्षा, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को ध्यान में रखकर की थी और इन क्षेत्रों में पनप रही अव्यवस्था, अप संस्कृति, उच्छृंखलता, अवैज्ञानिकता के उन्मूलनार्थ वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया था। हम इस लक्ष्य में कितना सफल हुए हैं महर्षि निर्वाण दिवस के अवसर पर हमें गहन चिन्तन करना होगा। ऋषिवर दयानन्द ने जिन मूल्यों का सूत्रपात किया वे वेद पर आधारित हैं। वेद की शिक्षाओं को अपना कर ही समूचे विश्व को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। स्वामी दयानन्द जी ने इस संसार से विदा लेने से पूर्व अपने भक्तों को अपने पीछे खड़े होने व भवन के दरवाजे, खिड़की खोलने का आदेश दिया था जिसके दो निहितार्थ थे, एक तो वेद के पीछे चलो अर्थात् वेदों की ओर लौटो और दूसरा आर्य समाज के दरवाजे सबके लिए खुले रखो। आज आवश्यकता है उपयोगी आर्य समाजों के निमार्ण की। जीवन की यात्रा में आपको हमेशा दो दिशाएं मिलती हैं आपको अपने विवेक से निर्णय करना होगा कि आप किस तरफ जाना चाहते हैं। एक उत्थान दूसरा पतन, एक दिशा विकास दूसरा विनाश, एक सुख–दुख दूसरा आनंद की। दीपावली जैसे पर्व दिशा तय करने में हमारी सहायता करते हैं जिनका संदेश बहुत ही स्पष्ट होता है। उत्थान विकास प्रकाश एक आनंद की दिशा में चलने का, आजकल भौतिकतावादी चकाचौंध में फंसता इन्सान पतन की ओर उन्मुख है। मानवता स्वार्थ की गहरी खाई में गिरी पड़ी है। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि दुगुर्णों से मानवीय स्वरूप विनष्ट हो रहा है। परिवार, समाज, देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व अंधविश्वास के अंधकार में फंसता हुआ अपने जीवन पथ से विमुख हो रहा है। दीपावली पर महर्षि दयानन्द का संदेश पूरे विश्व में गूंजना चाहिए। पाखंड, अंधविश्वास अविद्या के विरुद्ध लड़ी गयी उनकी लड़ाई और मजबूत होनी चाहिए। महर्षि के प्रति श्रद्धासुमन– भारत के गगन में जो भी बादल थे अविद्या के उन्हीं को वेद भानु से दयानन्द ने उखाड़ा था।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

ऋषिवर दयानन्द ने जिन मूल्यों का सूत्रपात किया वे वेद पर आधारित हैं। वेद की शिक्षाओं को अपना कर ही समूचे विश्व को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। स्वामी दयानन्द जी ने इस संसार से विदा लेने से पूर्व अपने भक्तों को अपने पीछे खड़े होने व भवन के दरवाजे, खिड़की खोलने का आदेश दिया था जिसके दो निहितार्थ थे, एक तो वेद के पीछे चलो अर्थात् वेदों की ओर लौटो और दूसरा आर्य समाज के दरवाजे सबके लिए खुले रखो। आज आवश्यकता है उपयोगी आर्य समाजों के निमार्ण की। जीवन की यात्रा में आपको हमेशा दो दिशाएं मिलती हैं आपको अपने विवेक से निर्णय करना होगा कि आप किस तरफ जाना चाहते हैं। एक उत्थान दूसरा पतन, एक दिशा विकास दूसरा विनाश, एक सुख-दुख दूसरा आनंद की। दीपावली जैसे पर्व दिशा तय करने में हमारी सहायता करते हैं जिनका संदेश बहुत ही स्पष्ट होता है।

महर्षि और आर्य समाज

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 12 अप्रैल, 1875 को मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज के जागरूक मंच से उन्होंने देश में फैली कुरीतियों और धर्म के नाम पर पाखंडों को जड़ से उखाड़ फेंकने के साथ-साथ गुलामी की बेड़ियों से जकड़ी मातृभूमि को विदेशियों से मुक्त कराने का आह्वान किया।

आर्य समाज वैदिक धर्म पर आधारित वह संगठन है, जो धर्म, अधर्म की व्याख्या तर्क की तुला पर तौलकर करता है। वेदों में स्पष्ट लिखा है कि ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है, वह अंतर्यामी है। इसलिए परमात्मा को किसी स्थान विशेष में सीमित करके नहीं रखा जा सकता। वह अजर, अमर और अभय इस समूचे जगत की उत्पत्ति करने वाला है। उसी सर्वशक्तितमान की उपासना यज्ञादि कर्मों द्वारा की जाती है।

यह उपासना जहां घरों में की जाती है, वहीं अवसर विशेष पर या रोजाना आर्यसमाज मंदिरों में सामूहिक यज्ञों से सम्पन्न होती है। इस प्रकार मूर्ति पूजा के बजाए परमपिता परमेश्वर की सजीव मूर्तियों यानि मानवमात्र के कल्याण की कामना आर्य समाज द्वारा की जाती है। आर्य समाज की प्रमुख विशेषता यह है कि वह छुआछूत का घोर विरोधी है, इसलिए इसके यज्ञ-सत्संग में प्रत्येक वर्ग या जाति का व्यक्ति शामिल हो सकता है। आर्य समाज ईश्वर रूप में किसी अवतार को धर्म विरुद्ध मानता है। क्योंकि वेदों में ईश्वर को अजन्मा बताया गया है। धार्मिक आग्रहों को लेकर आर्य समाज सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने की वकालत करता है। यदि कहीं कुछ संशय है, तो उसके निपटारे का साधन खुला शास्त्रार्थ है। अंतरजातीय विवाहों को लेकर आर्य समाज की विशिष्ट पहचान से आज सब वाकिफ हैं।

आर्य समाज में जाति बंधन से मुक्त विवाह को आज कानूनी रूप मिला हुआ है जिसके लिए आर्य समाज का विवाह प्रमाण पत्र बालिगों के लिए संजीवनी सिद्ध हो रहा है। स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने वाले आर्य समाज ने विधवा विवाह पर सरकार को कानून बनाने पर मजबूर कर दिया।

आर्य समाज के प्रचार से पूर्व यह पौराणिक हिन्दू जाति भूतपूजा, प्रेतपूजा, डाकिनी, शाकिनी पूजा, पीर मजार पूजा, गण्डा ताबीज पूजा, बुत पूजा, इन्सान पूजा, मकान पूजा, पानी पूजा, पशु पूजा, आग पूजा, मिट्टी पूजा, वृक्ष पूजा, श्मशान पूजा, मृतक पूजा, सूर्य पूजा, चांद पूजा इत्यादि अनेक रोगों में फंसी हुई थी और निकट था कि इन रोगों के कारण यह हमेशा के लिए मिट जाती कि महर्षि दयानंद और आर्य समाज रूपी चिकित्सक ने इसकी चिकित्सा की और वेद अमृत पिला कर इसके रोगों को दूर करके इसको एक परमात्मा का पुजारी बनाकर इस जाती को अमर कर दिया। यह भी आर्य समाज रूपी चिकित्सक की कृपा का फल है। अत: आर्यसमाज पीडितों का वकील है, रोगियों का डॉक्टर है और सोते हुओं का चौकीदार है।

इसलिए हम सब का कर्तव्य बनता है की आर्य समाज के साथ मिल कर देश और जाति का उद्धार करने में सहायक बने। महर्षि देव दयानन्द को शत् शत् नमन्!

!! ओ३म्!!

○○

- धन एक वस्तु है जो ईमानदारी और न्याय से कमाई जाती है, इसका विपरीत है अधर्म का खजाना।
- निरीह सुख सद गुणों और सही ढंग से अर्जित धन से मिलता है।
- उपकार बुराई का अंत करता है, सदाचार की प्रथा का आरम्भ करता है और लोक-कल्याण तथा सभ्यता में योगदान देता है।
- जीह्वा को उसे व्यक्त करना चाहिए जो हृदय में है।

.... महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रजापते न त्वदेता...

इस अंक से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के छठवें मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।

ऋग्. १०-१२१-१०

मंत्र का सीधा सा अर्थ ऋषि ने संस्कार विधि में निम्न प्रकार दिया है-

'हे प्रजापते! सब प्रजा के स्वामी परमात्मा! आप से भिन्न दूसरा कोई (ता) उन (दूरस्थ पदार्थ), (एतानि) इन (समीपस्थ) उत्पन्न हुए जड़चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है (उपेक्षा नहीं कर सकता है) अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, उस-उस की कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वयों के स्वामी होवें।

मंत्र पर अच्छी तरह विचार करने के लिए इसे निम्न खंडों में विभाजित करके व्याख्या प्रस्तुत करते हैं-

1. **प्रजपते** : यह सम्बोधन है। हे प्रजाओं के पालक, रक्षक स्वामी, परमेश्वर!

2. **त्वत् अन्यः एतानि-ता विश्वाजातानि न परिबभूव।** आपके अतिरिक्त अन्य कोई भी इन-उन उत्पन्न हुए समस्त जड़चेतन पदार्थों की उपेक्षा नहीं कर सकता।

3. **यत्कामास्ते जुहुमः तन्नो अस्तु** - जिस जिस कामना को लेकर हम आपको पुकारें, वे हमरी सब कामनाएं पूर्ण होंवे।

4. **वयं स्याम पतयो रयीणाम्**- हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी होवें।

प्रजापते : हे प्रजों के पालक रक्षक परमेश्वर! प्रार्थी अपनी प्राथना प्रभु के सामने प्रस्तुत करने के लिए, प्रभु को प्रजापति विशेषण से पुकार रहा है, जुहार रहा है। प्रजापति का अर्थ हुआ 'प्रजाओं का पालक-रक्षक, प्रजा का अर्थ हुआ 'प्रकर्षेण जायन्ते' इति प्रजा:, जो उत्पन्न हो वह प्रजा है। प्रजा जड़ भी हो सकती है और प्रजा चेतन भी हो सकती है। इस व्यापक अर्थ में पांच महाभूत-आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी प्रजा है। जगदीश्वर इनकी भी रक्षा करते हैं, इनका भी पालन करते हैं। इन्हीं महाभूतों के स्वस्थ अस्तित्व पर संसार के जलचर, थलचर, नभचर, वनस्पति, पशु-पक्षी, कीट-पतंग और सर्वश्रेष्ठ मानव का अस्तित्व निर्भर करता है। पशु-पक्षी, मनुष्य आदि इन्हें प्रदूषित करते हैं। किंतु जगदीश्वर की सृष्टि के निमय उन्हें स्वस्थ, स्वच्छ बनाये रखने में अनवरत क्रियाशील बने रहते हैं।

निरुक्त में प्रजापति की व्याक्या निम्न प्रकार दी हुई है- 'प्रजापतिः पाता वा पालयिता वा' प्रजापति पालक और रक्षक दोनों है।

शतपथ ब्राह्मण में प्रजापति का अर्थ निम्न प्रकार दिया हुआ है- (क) 'प्रजापतिः धाता' सृष्टि को धारण करने वाला जगदीश्वर प्रजापति है।

(ख) 'ब्रह्म वै प्रजापतिः ब्रह्मा प्रजापति है। सबका मिलाकर भाव यह हुआ कि प्रभु परमेश्वर इस विश्व ब्रह्माण्ड के प्रजापति हैं। वे सम्पूर्ण प्रजाओं को, उत्पन्न हुए जड़ चेतनादि को धारण, पालन आर रक्षण करने वाले हैं।

प्रजापतित्व के विभिन्न क्षेत्र : १. जड़ प्रकृति, वनस्पतिजगत् में प्रभु का प्रजापतित्व कैसा भुवन मन-मोहन है। सूखी धरती पर चिलचिलाती धूप, मरीचिमाली का प्रचण्ड तपन, झुलसता संसार, फिर यह क्या! वर्षा की फुहार,

हे प्रजों के पालक रक्षक परमेश्वर! प्रार्थी अपनी प्रार्थना प्रभु के सामने प्रस्तुत करने के लिए, प्रभु को प्रजापति विशेषण से पुकार रहा है, जुहार रहा है। प्रजापति का अर्थ हुआ 'प्रजाओं का पालक-रक्षक, प्रजा का अर्थ हुआ 'प्रकर्षेण जायन्ते' इति प्रजाः, जो उत्पन्न हो वह प्रजा है। प्रजा जड़ भी हो सकती है और प्रजा चेतन भी हो सकती है। इस व्यापक अर्थ में पाँच महाभूत-आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी प्रजा है। जगदीश्वर इनकी भी रक्षा करते हैं, इनका भी पालन करते हैं। इन्हीं महाभूतों के स्वस्थ अस्तित्व पर संसार के जलचर, थलचर, नभचर, वनस्पति, पशु-पक्षी, कीट-पतंग और सर्वश्रेष्ठ मानव का अस्तित्व निर्भर करता है। पशु-पक्षी, मनुष्य आदि इन्हें प्रदूषित करते हैं। किंतु जगदीश्वर की सृष्टि के निरामय उन्हें स्वस्थ, स्वच्छ बनाये रखने में अनवरत क्रियाशील बने रहते हैं। निरुक्त में प्रजापति की व्याक्या निम्न प्रकार दी हुई है- 'प्रजापतिः पाता वा पालयिता वा' प्रजापति पालक और रक्षक दोनों है। शतपथ ब्राह्मण में प्रजापति का अर्थ निम्न प्रकार दिया हुआ है- (क) 'प्रजापतिः धाता' सृष्टि को धारण करने वाला जगदीश्वर प्रजापति है। (ख) 'ब्रह्मा वै प्रजापतिः ब्रह्मा प्रजापति है। सबका मिलाकर भाव यह हुआ कि प्रभु परमेश्वर इस विश्व ब्रह्माण्ड के प्रजापति हैं।

'छटा छबीली, छटाछीर छिन-छिन छिति छहरै।' धरती लहलहा उठी, मयूर नाचने लगे, मेढ़क बोलने लगे, 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे' का उपयुक्त कण्ड पुकार उठा, 'आइल सावन कै महीना, बरसा बरसै झकाझूम'। मयूर के नृत्य, पक्षियों के कलरव, पशुओं के उछाह के साथ मानव मन भी आनंद विभोर हो उठा।

कहां पतझड़ थी, अब बसंत की बहार आ गई। शुष्क धरती मुस्करा कर गुलाब की कली बन गई। भक्त का हृदय अपने धाता, विधाता, प्रजापालक की भक्ति में भाव विभोर होकर झूम उठा-

किरणों में रूप तेरा, पुष्पों में वास है। धरती आकाश मेरे प्रभु का निवास है।

जिसने पर्व गगन, आग पानी पवन, सब बनाया, हमने उस ईश में मन लगाया।

शब्द करती नदी बह रही है, सनसनाती हवा चल रही है, कैसी उन्मादिनी, उस महादेव की मधुरमाया, हमने उस ईश में मन लगाया।

सब जग के आधार, नमस्कार-नमस्कार। हम तो आये तेरे द्वार, नमस्कार-नमस्कार।।

सूरज और चांद में है तेरा ही उजाला, तूने पहन रखी है सितारों की माला। महिमा अपरम्पार, नमस्कार-नमस्कार।।

2. चेतन जगत् में प्रभु का प्रजापतित्व- वनस्पति जगत् में प्रभु का पालन विचित्र है, पशु जगत भी कम विचित्र नहीं है। महाक्रूर, निष्ठुर, निर्दय, खूंखार शेर-शेरनी की वत्सलता, अपने बच्चों के प्रति स्नेहित मनोभाव, गजगंड प्रहारी नख, दांत, फूल जैसे कोमल हो जाते हैं। ममत्व, वत्सलता का यह महासागर पशु जगत में सर्वत्र है।

आइए मानव जगत को देखें। 'दूधो नहाओ, पूता फलो' की वर्षा हो रही है। बसंत की बहार, नन्हीं कली, नया अंकुर, यदि शीघ्र ही आ गया तब तो उल्लास की नयी बेला में परिवार झूम उठता है। यदि विलम्ब होने लगे तो घर में उदासी आ जाती है। ए अभाव का एहसास होने लगता है। संसार में सूखा, घर में सूखा, घर का सूखा भी पूरी वेदना देता है। मनुष्य समझदार न हो तो घर की उदासी अधिक वेदनाकारी होती है।

प्रभु कृपा, एक कली, मुस्कुरायी, एक अंकुर उदय हुआ। घर में बसंत की बहार आ गई। आनंद उल्लास का समां बंध गया। गीत होने लगे, मिठाइयां बंटने लगीं। इस बासंती बहार में सृजनहार की भूमिका प्रभु की पालकता का दर्शन भी कितना विचार रमणीय, मनमोहक, विस्मयकारी लगता है। कोई जीव अपने सूक्ष्म शरीर के साथ वायु-जल-शाक-फल आदि किसी माध्यम के जनक-पिता के शरीर में पहुंचता है।

पुनर्जन्म की यात्रा चालू है। माता के गर्भ लगभग २८० दिनों का हिसाब वैद्य डाक्टर बताते हैं, किंतु पिता के शरीर के शुक्र कीट की क्या अवधि है, हमें कुछ ज्ञात नहीं। हां, रसरक्त की स्थिति पार करके शुक्र में पहुंचकर जितने अधिक दिन वहां अवस्थित रहता है, उतना अधिक सबल शरीर जन्म के पश्चात् प्राप्त होता है। इस समयावधि में अपने पूर्वदैहिक संस्कारों के साथ ही पिता के शरीर से भी कई प्रकार के उपादान प्राप्त करता है।

यह सब तो प्रजापति के पालन में ही अंतर्भुक्त है। यहीं ममतामयी माता के उदर-उदधि में, गर्भ के अंधकार में, शिशु के शरीरकी रचना हो रही है। माता के उदर में समुद्र के समान लहरें उठती हैं-'यथावातो यथा वनं यथा समुद्र एजति' (ऋग्वेद), 'यथायं वायुरेजति, यथा समुद्र एजति' (युजः)। पानी में मनुष्य डूब जाता है। सद्योजात शिशु पानी में पकड़कर, डूबकर प्राण त्याग देगा। यहां माता के उदर-उदधि में हिलोरों के साथ निर्माण हा रहा है। विकास हो रहा है। संसार के सर्वाधिक विस्मयकारी मानव संयंत्र का निर्माण, विकास, पालनपोषण हो रहा है। धन्य है, धन्य है शतशः कोटिशः प्रजापति का प्रजापतित्व!!

मस्तिष्क जैसा जटिल संयंत्र, हृदय जैसा कोमल-संवेदनामय अंग, पाचन संस्थान, रक्त संस्थान संयंत्र, विसर्जन व्यवस्था, शक्ति, ऊर्जा की प्राप्ति, सभी कुछ प्रजापति का अद्भुत पालनकर्ता रूप है। बाह्य चेष्टाओं का आंतरिक प्रभाव, आंतरिक चेष्टाओं का बाह्य प्रभाव, अन्नमय कोष प्राण-मन-विज्ञान-आनंदमय कोषों को प्रभावित करता है।

प्रत्येक कोष अन्य सारे शेष कोषों को प्रभावित करता है- संवारता, सुधारता है, बिगाड़ता है। भावनाओं का मस्तिष्क पर, चिंतन का शरीर पर प्रत्यक्ष प्रभाव दीखता है। प्रभु की पालन प्रणाली भी कितनी सुंदर है। सोम स्वर शांति-शीतलता का वाहक है, सूर्य स्वर शक्ति, ऊष्मा का वाहक है। 'प्राणः सर्वस्य ईश्वरः'। मन सब का राजा है। क्या पालन क्या रक्षण?

शिशु आने वाला है, रंग, रूप, कद, बुद्धि, किसी के संबंध में प्रभु न बानगी मांगते हैं, न सलाह करते हैं। प्रभु की पूर्ति भी ऐसी कि बीज में ही दांच, भौंह, ओंठ, मूंछ, बाल, हड्डियां सबका प्रारूप निहित है-

कोई न पार पावे, महिमा अपार तेरी। सो धन-धन तेरी कारीगरी करतार। प्रभु अनंत हैं, उनका पालन प्रकार अनंत है। प्रभु अनंत, प्रभु कृपा अनंता।।

(शेष अगले अंक में) ○○

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाए।

■ प्रबंध संपादक : 9871798221

महाभारत और धर्म

डा. दीवान चन्द, डी.लिट.

(गतांक से आगे...)

ऐसा प्रतीत होता है कि शौनक के ध्यान में भी इसी प्रकार का भेद था। पितृलोक को ले जाने वाले साधन तप, जप, दान और अध्ययन-आचरण के आकार हैं; सत्य, इन्द्रियदमन, क्षमा और संतोष आचार के पक्ष हैं। तप शरीर और मन की दृढ़ता का आधार है। मिट्टी में जल मिलाकर उससे ईंट बनाई जाती है। सूर्य की गर्मी में वह सूखती है और दीवारों में लग सकती है। परंतु वायु और जल उसे कुछ समय के बाद बेकार कर देते हैं।

सूर्य की गर्मी में सूखना पर्याप्त तप न था। जब वह अच्छे काल के लिए भट्ठी में जलती है, तो पक्की ईंट बनी है। तप को बीमा कंपनी के चंदा से उपमा दी जाती है। जब तक आपत्ति नहीं आती चंदा देने की उपयोगिता दिखाइ नहीं देती, आपत्ति आने पर स्थिति भिन्न रूप में दिखने लगती है। यही तपस्या की बात कह सकते हैं।

जप ईश्वर का नाम लेना है। साधारण मनुष्य के लिए यह उपासना का सहज तरीका है। तप और जप विशेष कर उन लोगों के लिए यह उपासना का सहज तरीका है। तप और जप विशेष कर उन लोगों के लिए हैं, जो गृहस्थ के धंधों से विमुक्त हो चुके हैं या हो रहे हैं। दान देना गृहस्थों का धर्म है। वे जो कुछ कमाते हैं उसमें समाज का और अन्य नागरिकों का पर्याप्त योगदान होता है। दान इस ऋण को कुछ चुका देता है।

अध्ययन या स्वाध्याय सबके लिए कर्त्तव्य कर्म है। सत्य, इंद्रियदमन, क्षमा और संतोष आचार के लक्षण हैं। इंद्रियदमन व्यक्ति के जीवन में साम्य पैदा करता है। घोड़े पर एक मनुष्य बैठा है। जब तक घोड़ा उसके काबू में है, वह घोड़े पर सवार है, जब घोड़ा नियंत्रण में न रहे, तो घोड़ा वास्तव में सवार होता है।

इंद्रियां वश में न हों तो वे दास नहीं रहतीं, मालिक हो जाती हैं। जिस जगत में हम रहते हैं, उसमें अनेक अन्य मनुष्य भी रहते हैं। अपने निर्वाह के लिए हर एक को काम करना होता है, जो कुछ वह कमाता है, वही उसका है। उसे अपने दावों को सीमा में रखना चाहिए, यह संतोष है। सत्य सामाजिक जीवन का आधार है, क्षमा अहिंसा से एक पग आगे जाती है।

इंद्रियां वश में न हो तो वे दास नहीं रहतीं, मालिक हो जाती हैं। जिस जगत में हम रहते हैं, उसमें अनेक अन्य मनुष्य भी रहते हैं। अपने निर्वाह के लिए हरेक को काम करना होता है, जो कुछ वह कमाता है, वही उसका है। उसे अपने दावों को सीमा में रखना चाहिए, यह संतोष है। सत्य सामाजिक जीवन का आधार है, क्षमा अहिसा से एक पग आगे जाती है। मनु ने धर्म के दस लक्षण दिये हैं, उनमें भी क्षमा, दम, इन्द्रियनिग्रह, सत्य, विद्या (अध्ययन) शामिल हैं। योगदर्शन के नियमों और यमों में संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान (जप), अहिसा, सत्य, ब्रह्मचर्य शामिल हैं। धर्म के कुछ लक्षण सामान्य स्वीकृति प्राप्त कर चुके थे, वे एक तरह से आध्यात्मिक वातावरण का अंश बन गये थे

मनु ने धर्म के दस लक्षण दिये हैं, उनमें भी क्षमा, दम, इन्द्रियनिग्रह, सत्य, विद्या (अध्ययन) शामिल हैं। योगदर्शन के नियमों और यमों में संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान (जप), अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य शामिल हैं। धर्म के कुछ लक्षण सामान्य स्वीकृति प्राप्त कर चुके थे, वे एक तरह से आध्यात्मिक वातावरण का अंश बन गये थे।

स्वर्ग और नरक की प्राप्ति : साधारण विचार के अनुसार, धर्म का अनुसरण स्वर्ग का अधिकारी बनाता है, अधर्म नरक का भागी बनाता है। पार्वती ने महादेव से पूछा- मनुष्य किस प्रकार के स्वभाव, सदाचार, कर्म और दान से स्वर्गलोक का अधिकारी बनता है? पार्वती ने अपने प्रश्न में कर्म के साथ स्वभाव और शिष्टाचार को भी शामिल कर दिया है। शिष्टाचार में ऐसा व्यापार आता है जो सामाजिक व्यवहार में मूल्यवान समझा जाता है, परंतु उसे धर्म का पद नहीं दिया जाता।

जब कोई मनुष्य मुझे मिलने आता है, तो शिष्टाचार की मांग यह है कि मैं उठ कर उसे मिलूं, उसे कुर्सी पर बिठाऊं और अपनी बातचीत में मधुरता और अतिथि-सम्मान को ध्यान में रखूं। परंतु ऐसा न करना अधर्म नहीं, वह मुझे नरक का भागी नहीं बनाता। कड़वा स्वभाव मुझे यहां ही पर्याप्त दंड दे देता है। महादेव ने जो उत्तर पार्वती को दिया, उसमें इस भेद को ध्यान में रखना चाहिए।

महादेव ने कहा : 'जो मनुष्य ब्राह्मणों का सम्मान करता है और दीन मनुष्यों पर दया करके अन्न-वस्त्र आदि देता है, जो कुआं बावली आदि बनवाता है, वह मरने के बाद देवलोक में चिरकाल तक हर प्रकार के भोग भोगकर फिर संसार में धनवान के घर जन्म पाता है। ...ब्रह्मा जी ने दानी लोगों का ऐसा ही सौभाग्य बतलाया है। 'धन

रखते हुए भी दान न देने वाले मरने के बाद नरक को जाते हैं और वहां अनेक कष्ट भोगकर किसी निर्धन मनुष्य के घर में जन्म पाते हैं। महादेव ने दान से आरम्भ किया है और दान के तीन प्रमुख का जिक्र किया है-

विद्वान ब्राह्मण को दान देना चाहिए, जो अपना समय अध्ययन और अध्यापन में व्यतीत करता है। दोनों में ब्रह्मदान (विद्यादान) को पहले उत्तम दान बताया है। ब्राह्मण ऐसा दान करता है, उसे दान देने वाला भी ब्रह्म दान में भागी बनता है। किसी दूसरे की सबसे बड़ी सहायता यह है कि उसे अपनी सहायता करने के योग्य बनाया जाये। शिक्षा इसका अपूर्व साधन है। विद्या प्रचार का दावा लोगों के दान पर प्रथम दावा है।

दूसरे दर्जे पर वह लोग है जो किसी कारण से अपनी सहायता करने के अयोग्य हैं। उनकी सामयिक आवश्यकता पूरी करनी चाहिए। यह दो दान किसी व्यक्ति को दिये जाते हैं। तीसरे प्रकार का दान सार्वजनिक उपकार के रूप में होता है, इसमें ब्राह्मण और अब्राह्मण, निर्धन और धनी का भेद नहीं किया जाता। यह साझे वातावरण को बेहतर बनाता है और उस वातावरण में सभी श्वास लेते हैं।

विद्वान ब्राह्मण को दान देना चाहिए, जो अपना समय अध्ययन और अध्यापन में व्यतीत करता है। दोनों में ब्रह्मदान (विद्यादान) को पहले उत्तम दान बताया है। ब्राह्मण ऐसा दान करता है, उसे दान देने वाला भी ब्रह्म दान में भागी बनता है। किसी दूसरे की सबसे बड़ी सहायता यह है कि उसे अपनी सहायता करने के योग्य बनाया जाये। शिक्षा इसका अपूर्व साधन है। विद्या प्रचार का दावा लोगों के दान पर प्रथम दावा है। दूसरे दर्जे पर वह लोग है जो किसी कारण से अपनी सहायता करने के अयोग्य हैं। उनकी सामयिक आवश्यकता पूरी करनी चाहिए। यह दो दान किसी व्यक्ति को दिये जाते हैं। तीसरे प्रकार का दान सार्वजनिक उपकार के रूप में होता है, इसमें ब्राह्मण और अब्राह्मण, निर्धन और धनी का भेद नहीं किया जाता

जो मनुष्य दान करता है, वह यह बताता है कि उसमें धन के उचित व्यय की क्षमता है। उसे स्वर्ग के भोगों के बाद किसी धनी के घर में जन्म मिलता है; उसके अपने सुख के लिए ही नहीं, अपितु इसलिए भी कि वह फिर दान और उपकार में धन का व्यय कर सके। दान न देने वाला नरक के क्लेशों को भोग कर निर्धन घर में जन्म लेता है, आप दुखी रहता है और दूसरों को सहायता देने की क्षमता से भी वंचित रहता है।

शिष्टाचार : जो मनुष्य धन के गर्व में सम्मान योग्य मनुष्यों का सम्मान नहीं करता, मार्ग देने योग्य लोगों को मार्ग नहीं देता, मान्य पुरुषों और वृद्धों का अपमान करता है, वह अवश्य नरक में जाता है। जब चिरकाल तक नरक के दुख भोग चुकता है तो व संसार में चंडाल आदि नीच जातियों में जन्म लेता है। जो मनुष्य विनीत होकर सबसे मिलता है, जो सबका उचित सत्कार करता है, जो मार्ग देने योग्य मनुष्यों को मार्ग देता है, गुरुओं का उचित सम्मान करता है, अतिथि सत्कार करता है, वह स्वर्ग में जाता है। वहां चिरकाल तक भोग भोग कर किसी श्रेष्ठ कुल में जन्म लेता है।

अत्याचार : जो मनुष्य दूसरों को भयभीत करता है, जो हाथ-पांव, रस्सी, लाठी आदि से उन्हें मारता है, जो दूसरों पर आक्रमण करता है, वह अवश्य नरक में जाता है। यदि वह फिर मनुष्य जन्म पाता है, तो किसी नीच कुल में पैदा होकर अनेक विपत्तियां सहता है और सबका शत्रु होता है।

दान न करने वाला और अशिष्ट आचरण करने वाला दोनों ही फिर मनुष्य जन्म पाते हैं, पर कुछ रोकों के साथ। अत्याचारी पुरुष के संबंध में यह भी संदिग्ध है। यदि उसे मनुष्य जन्म मिल भी जाये, तो नीच कुल में मिलता है, और उसका स्वभाव उसे सबका शत्रु बना देता है। मित्र-भाव जो जीवन को मधुर बनाने में इतना भाग लेता है, उसके स्वभाव का अंश ही नहीं होता।

हितकर स्वभाव और परोपकार : जो मनुष्य जितेन्द्रिय, वैरविहीन, दयावान है और सबको मित्र भाव से देखता है, जो सबका विश्वास-पात्र होता है (किसी से विश्वासघात नहीं करता), वह स्वर्गलोक में जाता है, वहां देवों की तरह रहता है। जब मनुष्यलोक में फिर आता है, तो सुखी जीवन व्यतीत करता है; किसी विपत्ति में फंसता नहीं। यह अच्छे स्वभाव की प्रशंसा है। (अनुशासन पर्व: १४५)

OO

"जीवन में मृत्यु को टाला नहीं जा सकता, हर कोई ये जानता है, फिर भी अधिकतर लोग अन्दर से इसे नहीं मानते- 'ये मेरे साथ नहीं होगा,' इसी कारण से मृत्यु सबसे कठिन चुनौती है जिसका मनुष्य को सामना करना पड़ता है।"

- स्वामी दयानन्द सरस्वती

ईश्वर का नाम 'सच्चिदानन्द' क्यों व कैसे

मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर के अनेक नामों में से एक नाम 'सच्चिदानन्द' भी है। प्राय: हम सुनते हैं कि जयघोष करते हुए धार्मिक आयोजनों में कहा जाता कि 'श्री सच्चिदानन्द भगवान की जय हो'। यह सच्चिदानन्द नाम ईश्वर का क्यों व किसने रखा है? इसका तात्पर्य व अर्थ क्या है? इसी पर विचार करने के लिए कुछ पंक्तियां लिख रहे हैं। सृष्टि के समग्र ऐश्वर्य का स्वामी होने के कारण इस सृष्टि के रचयिता, पालनकर्ता व संहारकर्ता को ईश्वर कहा जाता है।

इस संसार में जितना भी वैभव या धन, दौलत जो ऐश्वर्य के ही भिन्न नाम है, इसका स्वामी केवल एक सृष्टिकर्ता ईश्वर है। ईश्वर के तीन प्रमुख कार्यों सृष्टि की रचना, इसका पालन व प्रलय करने के कार्यों को करने वाला तथा सृष्टि की समस्त सम्पत्ति का स्वामी वही एक ईश्वर है, यह जान लेने पर अब सच्चिदानन्द शब्द व ईश्वर के स्वरूप पर विचार करते हैं। सच्चिदानन्द मुख्यत: तीन शब्दों व पदों को जोड़कर बनाया गया है जिसमें पहला पद है सत्य, दूसरा है चित्त और तीसरा पद आनन्द है। यह ईश्वर का स्वाभाविक स्वरूप अनादि काल से है व अनन्त काल अर्थात् हमेशा ऐसे का ऐसा ही रहेगा, इसमें कोई परिवर्तन कभी नहीं होगा, देश–काल–परिस्थितियों का इस पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

सत्य शब्द किसी के अस्तित्व की सत्यता को कहते हैं। ईश्वर सत्य है, यदि ऐसा कहें तो इसका अर्थ होता है कि ईश्वर का अस्तित्व वास्तविक व यथार्थ है अर्थात् सत्य है। इसका विपरीत अर्थ करें तो कहेंगे कि ईश्वर का अस्तित्व होना मिथ्या नहीं है। ऐसा नहीं है कि ईश्वर हो ही न और हम कहें कि उसका अस्तित्व इस संसार व जगत में विद्यमान व उपस्थित है। इसी प्रकार से जिन पदार्थों को भी सत्य कहा व माना जाता है उनका अस्तित्व होता है और जिनका अस्तित्व नहीं होता वह मिथ्या पदार्थ होते व कहे जाते हैं। इससे यह ज्ञात हुआ कि ईश्वर की सत्ता अवश्य विद्यमान है, यह सत्य है, झूठ नहीं है। अब दूसरे शब्द चित्त पर विचार करते हैं। चित्त का अर्थ है चेतन पदार्थ। चेतन का अर्थ है कि उसमें संवेदनशीलता है, जड़ता नहीं।

ईश्वर जड़ या भौतिक पदार्थ नहीं है। वह जड़ के विपरीत चेतन गुण वाला तथा भौतिक के स्थान पर अभौतिक पदार्थ है। जड़ पदार्थों में स्वत: कोई क्रिया नहीं होती, वह चेतन की प्रेरणा या ईश्वर द्वारा निर्मित प्राकृतिक नियमों के अनुसार होती है जिन्हें भी हम ईश्वर की प्रेरणा कह सकते हैं। हम व हमारी आत्मा चेतन है, जड़ नहीं। यह मस्तिष्क जो कि हमारी आत्मा का साधन है, इसकी सहायता से सोचती है और विचार करने का सामर्थ्य सभी चेतन आत्माओं में होता है।

यदि आत्मा न हो तो मस्तिष्ठ निष्क्रिय ही रहेगा। इसका कोई सकारात्मक उपयोग नहीं होगा। आत्मा न केवल मस्तिष्क अपितु शरीर के सभी अंगों व इन्द्रियों का मन व मस्तिष्क की सहायता से अपने उद्देश्य की पूर्ति में साधन रूप में उपयोग करती है। शरीर में आत्मा द्वारा पैर को इशारा या प्रेरणा करने पर पैर चलने लगते हैं, रुकने का इशारा करने पर रुक जाते हैं। ऐसी ही सब अंगों की स्थिति है। इसी प्रकार से

सच्चिदानन्द मुख्यतः तीन शब्दों व पदों को जोड़कर बनाया गया है जिसमें पहला पद है सत्य, दूसरा है चित्त और तीसरा पद आनन्द है। यह ईश्वर का स्वाभाविक स्वरूप अनादि काल से है व अनन्त काल अर्थात् हमेशा ऐसे का ऐसा ही रहेगा, इसमें कोई परिवर्तन कभी नहीं होगा, देश-काल-परिस्थितियों का इस पर कोई प्रभाव नहीं होगा। सत्य शब्द किसी के अस्तित्व की सत्यता को कहते हैं। ईश्वर सत्य है, यदि ऐसा कहें तो इसका अर्थ होता है कि ईश्वर का अस्तित्व वास्तविक व यथार्थ है अर्थात् सत्य है। इसका विपरीत अर्थ करें तो कहेंगे कि ईश्वर का अस्तित्व होना मिथ्या नहीं है। ऐसा नहीं है कि ईश्वर हो ही न और हम कहें कि उसका अस्तित्व इस संसार व जगत में विद्यमान व उपस्थित है। इसी प्रकार से जिन पदार्थों को भी सत्य कहा व माना जाता है उनका अस्तित्व होता है और जिनका अस्तित्व नहीं होता वह मिथ्या पदार्थ होते व कहे जाते हैं।

ईश्वर भी मूल प्रकृति को प्रेरणा कर सृष्टि की रचना करते हैं और सृष्टि की अवधि पूरी होने पर इसकी प्रलय करते हैं। वह जीवात्माओं के कर्मों के साक्षी होकर उसके शुभाशुभ अर्थात पुण्य-पाप कर्मों के फल देते हैं। उन्हें सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी होने के कारण सभी जीवों के अतीत व वर्तमान के कर्मों का पूरा-पूरा ज्ञान होता है। कोई भी जीव कर्म करने के बाद उसके फल को भोगे बिना छूटता नहीं है। पुण्य कर्मों का फल सुख व अशुभ अथवा पाप कर्मों का फल दुख होता है। जन्म व मरण भी हमारे शुभाशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होते हैं। यह था ईश्वर का चेतन स्वरूप और उस स्वरूप के द्वारा किये जाने वाले कुछ कार्य।

आनन्द भी ईश्वर का स्वाभाविक गुण है। वह आनन्द से युक्त व पूर्ण है। उसमें अपने लिये कोई इच्छा नहीं है। इच्छा का कोई उद्देश्य होता है। इच्छा तो तब हो जब कोई अपूर्णता या आवश्यकता हो। ऐसा ईश्वर में कुछ घटता नहीं है। वह सदा-सर्वदा-हर समय सुख की पराकाष्ठा से परिपूर्ण है और हमेशा रहेगा। आनन्द का गुण होने के कारण वह सदा शान्तचित्त रहता है। इसमें न क्रोध होता है, न कोई निजी कामना, न रोग, शोक और मोह अथवा राग व द्वेष। इस प्रकार से वह सदा स्थिर चित्त रहकर संसार का संचालन व पालन करता है। उसका यह आनन्द का गुण हम जीवों के लिए बहुत लाभदायक है। हम विधि पूर्वक स्तुति-प्रार्थना-उपासना करके उससे इच्छित कामनायें सिद्ध व पूरी कर सकते हैं।

जीवात्मा का स्वरूप ईश्वर की तुलना में सत्य-चित्त-आनन्द की अपेक्षा सत्य-चित्त मात्र ही है। जीवात्मा में आनन्द का अभाव है। इसी कारण वह जन्म-जन्मान्तरों में सुख व आनन्द की खोज व प्राप्ति में भटकता रहता है। भौतिक पदार्थों जिनके पीछे वह भागता है, आधुनिक व वर्तमान युग में विवेकहीन होकर मनुष्य कुछ अधिक ही दौड़ लगा रहा है, उसमें क्षणिक सुख है जो कि अस्थाई है। वह ईश्वर से प्राप्त होने वाले आनन्द की तुलना में नगण्य हैं। ईश्वर व उसके आनन्द को विवेक से ही जाना जा सकता है। इसी कारण विवेकशील धार्मिक लोग धन व भौतिक पदार्थों के पीछे दौड़ने के स्थान पर ईश्वर की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं। यही वास्तविक धर्म-कर्म होता है।

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, यज्ञ, अग्निहोत्र, सेवा, परोपकार, माता-पिता-अतिथियों का सत्कार आदि से आनन्द की प्राप्ति व दु:खों से छूटने के लक्ष्य की प्राप्ति होती है। ईश्वर का आनन्द कैसे प्राप्त होता है? इसका विधान कुछ ऐसा है कि जैसे स्विच आन करने पर हमारे घरों के बल्ब जल उठते हैं वैसे ही उपासना में ईश्वर से सम्पर्क व कनेक्शन लग जाने अर्थात् ध्यान में स्थिरता व निरन्तरता आ जाने पर उसका आनन्द हमारी आत्मा में प्रवाहित होने से हमारे दु:ख व क्लेश दूर होकर हम आनन्द से भरपूर हो जाते है। सिद्ध योगियों को यह आनन्द मिलता है। योग में आंशिक सफलता मिलने पर भी कम मात्रा से यह आनन्द प्राप्ति का क्रम आरम्भ हो जाता है। योगी जितना आगे बढ़ता है उतना ही अधिक आनन्द उसको प्राप्त होता है। इस प्रकार हमने ईश्वर के आनन्द स्वरूप पर भी विचार किया और कुछ जानने का प्रयास किया।

अत: सत्य, चित्त व आनन्द से युक्त होने के कारण ईश्वर के प्रमुख नामों में से एक नाम 'सच्चिदानन्द' भी है। हम आशा करते हैं कि पाठक इसे जानने के बाद ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना अर्थात् क्रियात्मक योग की ओर प्रेरित हो सकते हैं और होना भी चाहिये। यौगिक जीवन ही आदर्श मानव जीवन है। इसके विपरीत तो भोगों से युक्त जीवन ही होता है जिसका परिणाम जन्म-जन्मान्तरों के बंधन, रोग, दु:ख व अवनति का मिलना होता है। मार्ग का चयन हमारे हाथ में है। जिसे योग मार्ग अच्छा लगे वह उस पर चले और जिसे भोग मार्ग अच्छा लगे वह उस पर चल सकता है, फल देना ईश्वर के हाथ में है। प्रसिद्ध सत्य लोकोक्ति है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र और फल भोगने में परतंत्र है। OO

प्रेरक विचार

- शराब एक ऐसा बुरा व्यसन है जिसके पीने से विवेक, संयम, ज्ञान, सत्य, दया और क्षमा ये सारे गुण समाप्त हो जाते हैं। अत: इससे बचे रहना चाहिए।
- नरक बुरा है किंतु दुष्टों का संग उससे भी अधिक बुरा है।
- जब भी कुछ मांगना हो उस परमपिता दयालु परमेश्वर से ही मांगिए। वह सब की शुभकामनाएं पूरी करने वाला है। किसी अन्य से या जड़ पदार्थ से मांगने पर कुछ मिलने वाला नहीं है।
- काम और क्रोध से आदमी अंधा हो जाता है इन दोनों से आयु घटती है। जब क्रोध आता है मनुष्य अपना विवेक खो देता है।

सत्य की राह पर चलें और स्वयं को पहचाने

प्रत्येक मनुष्य को सत्य की राह पर चलना अपने जीवन को नई दिशा देने के समान है। असत्यवादी व्यक्ति तो हमेशा अपने को बचाने में लगा रहता है। हम सभी जानते हैं कि एक असत्य को छुपाने के लिए सौ बार असत्य बोलना पड़ता है। लेकिन हम फिर भी असत्य बोलते हैं और दुख प्राप्त करते हैं। हमें अपने जीवन को श्रेष्ठ और उत्तम बनाना है तो सत्य को अपनाना ही पड़ेगा क्योंकि असत्य तो दुख का कारण होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य समाज के नियम में लिखते हैं- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

हमारे सभी महापुरुषों ने सत्य बोलने की प्रेरणा सभी मानव मात्र को दी। लेकिन मुष्य इन सभी उपदेशों को भूल गया। भगवान श्रीकृष्ण से सुदामा ने मित्रता में गुरुकुल शिक्षा के समय झूठ बोला था उसका परिणाम यह हुआ सुदामा निर्धन हो गये और दुखों का सामना करना पड़ा। ठीक इसी प्रकार मनुष्य जब सत्य की राह को छोड़ता है तो दुखों का सामना करना पड़ता है।

सामान्य अवस्था में भी हम देखते हैं कि मनुष्य सत्य और वेद मार्ग को अपनाता है तो उसे दुखों की प्राप्ति होती है। हमारे इतिहास में अनेकों उदाहरण सत्य के संबंध में मिलते हैं- राजा हरिश्चंद्र ने सत्य की खातिर अपने राज्य को छोड़ दिया और तो और अपनी पत्नी, पुत्र स्वयं को बेचना पड़ा लेकिन सत्य मार्ग का नहीं छोड़ा। ऐसा हमारा गौरवशाली इतिहास रहा है।

हम अपने संकल्पों के कारण विश्व गुरु रहे हैं। लेकिन आज का मानव सत्य मार्ग का भूल गया है और तो और अपने अस्तित्व को भी भूल गया है। जब कि हमारे अनेकों ग्रंथों में सत्य के संबंध में कहा गया है- 'सांच पर तप नहीं झूठ बराबर पाप। जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप।' (कबीर दोहावली)

कबीर जी कहते है सत्य के संबंध में कहें हैं सत्य बोलने वाले व्यक्ति के अंदर परमात्मा निवास करता है। सबसे बड़ा तप सत्य को ही माना गया है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य सत्य मार्ग अपनाकर अपने जीवन को सौम्य बनाना चाहिए।

तैत्तिरियोपनिषद में कहा गया है कि 'सत्यं वद, धर्मं चर अर्थात् सत्य बोलें और धर्म पर चलें। यह मानव जीनव के लिए सबसे उत्तम और श्रेष्ठ मार्ग है। इसलिए हम सब मिलकर परमात्मा की भक्ति करें, सत्य बोले और अपने जीवन को सरल और मधुर बनाकर जीवन का आनंद लें। यही मानव जीवन के लिए स्वर्ग है।

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

हमारे सभी महापुरुषों ने सत्य बोलने की प्रेरणा सभी मानव मात्र को दी। लेकिन मुष्य इन सभी उपदेशों को भूल गया। भगवान श्रीकृष्ण से सुदामा ने मित्रता में गुरुकुल शिक्षा के समय झूठ बोला था उसका परिणाम यह हुआ सुदामा निर्धन हो गये और दुखों का सामना करना पड़ा। ठीक इसी प्रकार मनुष्य जब सत्य की राह को छोड़ता है तो दुखों का सामना करना पड़ता है। सामान्य अवस्था में भी हम देखते हैं कि मनुष्य सत्य और वेद मार्ग को अपनाता है तो उसे दुखों की प्राप्ति होती है। हमारे इतिहास में अनेकों उदाहरण सत्य के संबंध में मिलते हैं- राजा हरिश्चंद्र ने सत्य की खातिर अपने राज्य को छोड़ दिया और तो और अपनी पत्नी, पुत्र स्वयं को बेचना पड़ा लेकिन सत्य मार्ग का नहीं छोड़ा। ऐसा हमारा गौरवशाली इतिहास रहा है।

अहिंसा परमो धर्मः

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

विश्वस्याखिलस्य यावन्तो धर्मग्रंथाः ख्याताः तेषु जीवहिंसा सर्वथा निषिद्धा एव। भारतीयशास्त्रेषु न केवलं जीवस्य शारीरिहिंसा एव वर्जिता, अपि तु मानसिकी वाचिकी हिंसा अपि निषिद्धा विद्यते। योगदर्शने योगसाधनासोपानेषु अहिंसापालनमपि एकतमं सोपानमस्ति। बौद्धदर्शने जैनदर्शने च अहिंसा सर्वस्वरूपेण तिष्ठति। सनातनधर्मेपि जीवहिंसा निषिद्धा एव।

न केवलं प्राणिनां शारीरिको हिंसा एव हिंसा, अति तु वचसा कुटुभाषणेन मिथ्यालापेन वा तेषां मनः संतापनमपि हिंसा, अति तु वचसा कटुभाषणेन मिथ्यालापेन वा तेषां मनः संतापनमपि हिंसा एव। एवमेव मनसा परापकारचिन्तनमपि हिंसा। आसां हिंसानां सर्वथा परित्यागः एवाहिंसा नाम परमो धर्मः। अतः जनैः मनसा वचसा कर्मणा च परेषां प्रतिकूलानि कार्याणि कदापि न कार्याणि। उक्तञ्च-

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

अहिंसाया विद्यते काप्यनुपमा विलक्षणा शक्तिः। सार्वभौमरूपेण आचरणात् पालनात् वा अहिंसामहाव्रतं साधकेषु विशिष्टविभूतीः शक्तिः च समुद्भावयति, येन ते लोकजयिनः भवन्ति। अहिंसायम् अमोघशस्त्रं गृहीत्वा आधुनिके युगे महात्मागान्धिमहोदयाः अत्याधुनिकैः आग्नेयास्त्रैः सुसज्जितान् आंग्लशासकान् रक्तपापं बिना पराभूय भारतदेशस्य स्वातंत्र्यं लब्धवन्तः। अहिंसायाः प्रभावात् शत्रवोऽपि मित्रवदाचरन्ति। क्रूरा अपि स्वदुष्टस्वभावं परित्यज्य सत्संगतिप्रभावात् उदारा भवन्ति। महर्षेः वाल्मीकेः जीवनवृत्तं नास्ति अविदितं केनापि संस्कृतविदुषा। अपकारिणः व्याघ्रादयोऽपि संसर्गवशात् हिंसावृत्तिं परित्यज्य अहिंसका भवन्ति इति 'सर्कस्' इत्याख्ये मनोरञ्जने दृष्टमेव सर्वैः।

यद्यपि हिंसावृत्तिः न सर्वथा त्याज्या, तथापि यत्र अहिंसया एव कार्यं सिद्ध्येत्, तत्र हिंसायाः प्रयोगः न कार्यः। प्रायंशः अस्माकं कार्याणि हिंसा विनाऽपि सिद्धानि स्युः तत्र हिंसा अनावश्यकी। तथापि सर्वत्र हिंसायाः अतिशयेन पालनमनुचितम्। यतः अहिंसया देशरक्षा कथमपि भवितुं नार्हति। अस्य प्रमाणं तु स्वतंत्रतावाप्तेः अन्नतरमेव पाकिस्तान-चीनयोः सङ्ग्रामम्। अत एव अहिंसा परमो धर्मः, इति योगिनामुपयोगिसिद्धान्तः। यतो हि योगप्रभावेण सिद्धिप्रभावेण च हिंसायामपि चतुर्दिशं अहिंसां कुर्वन्ति। गृहस्थानां कृते क्वचिद्हिंसा क्वचिदहिंसा यथायोगं समुचितम्। धर्मसंस्थापनार्थमपि दुष्कृतानां विनाशाय हिंसा भवति।

यद्यपि हिंसया लौकिकाभ्युन्नतिः, श्रीसमृद्धिः, शान्तिश्च लभ्यते, यथापि तत्सर्वं न पारमार्थिकम्। परमार्थसिद्धिस्तु सर्वभूतेषु आत्मवत् आचरणेनैव भवति। अहिंसा मानवसंस्कृतेः सर्वोत्तमा निष्पात्तिरिति नात्र संदेहः। साम्प्रतम् अस्मिन् जगति सर्वत्र हिंसायाः साम्राज्यं दृश्यते। राष्ट्रसंघर्षः, जातिसंघर्षः, वर्गसंघर्षः समुदायसंघर्षः, धर्मसम्प्रदाययोः संघर्षः समाचारपत्रेषु प्रतिदिनं प्रकाश्यते। कुत्राऽपि शान्तिव्यवस्था न दृश्यते।

अत एव लोककल्याणाय मानवजातेः अभ्युत्थानाय विश्वशान्तिहेतवे चाहिंसाव्रतपालनं सम्प्रति परमावश्यकमिति। न केवलं जीवहिंसा परिहर्त्तव्या हरितलता वनस्पतिवृक्षादीनामपि पातनं परिहर्त्तव्यम्। तेषां समुच्छेदनं कीर्त्तनं विनाशनं मानवजातेः विनाशाय भवति। अनेनाहिंसाव्रतपालनेनैव लोकधर्मस्याभिवृद्धिः भविष्यति तथा च 'अहिंसा परमो धर्मः' इत्युद्घोषः सफलो भविष्यति। ○○

- मनुष्यों के भीतर संवेदना है, इसलिए अगर वो उन तक नहीं पहुंचता जिन्हें देखभाल की ज़रूरत है तो वो प्राकृतिक व्यवस्था का उल्लंघन करता है।
- संगीत भाषा, संस्कृति और समय से परे है, और नोट समान होते हुए भी भारतीय संगीत अद्वितीय है क्योंकि यह विकसित है, परिष्कृत है और इसमें धुन को परिभाषित किया गया है।

.... *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

पं जवाहर लाल नेहरू

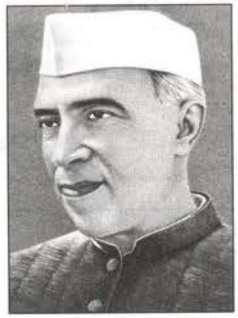

जन्म : 14 नवम्बर
शत्-शत् नमन

पं. जवाहरलाल नेहरू (नवंबर 14, 1889–मई 27, 1964) भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे और स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात् की भारतीय राजनीति में केन्द्रीय व्यक्तित्व थे। महात्मा गांधी के संरक्षण में, वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सर्वोच्च नेता के रूप में उभरे और उन्होंने 1947 में भारत के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापना से लेकर 1964 तक अपने निधन तक, भारत का शासन किया। वे आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य-एक सम्प्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, और लोकतांत्रिक गणतंत्र के वास्तुकार माने जाते हैं। कश्मीरी पंडित समुदाय के साथ उनके मूल की वजह से वे पंडित नेहरू भी बुलाए जाते थे, जबकि भारतीय बच्चे उन्हें चाचा नेहरू के रूप में जानते हैं। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का पद संभालने के लिए कांग्रेस द्वारा नेहरू निर्वाचित हुए, गांधीजी ने नेहरू को उनके राजनीतिक वारिस और उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार किया। प्रधानमंत्री के रूप में, वे भारत के सपने को साकार करने के लिए चल पड़े। भारत का संविधान 1950 में अधिनियमित हुआ, जिसके बाद उन्होंने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के एक महत्त्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की। विदेश नीति में, भारत को दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय नायक के रूप में प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने गैर-निरपेक्ष आंदोलन में एक अग्रणी भूमिका निभाई। भारत में उनका जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता हैं और बच्चों के वह चाचा नेहरू थे।

महात्मा हंसराज : आर्यसमाज नेता एवं शिक्षाविद

स्मृति : 15 नवम्बर
शत्-शत् नमन

भारत में शिक्षा के प्रसार में डीएवी विद्यालयों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यालयों की इस श्रृंखला के संस्थापक हंसराज जी का जन्म महान संगीतकार बैजू बावरा के जन्म से प्रसिद्ध हुए ग्राम बैजवाड़ा, जिला होशियारपुर, पंजाब में 19 अप्रैल, 1864 को हुआ था। बचपन से ही शिक्षा के प्रति इनके मन में बहुत अनुराग था पर विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते थे। वह शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी उन्होंने 22 वर्ष की आयु में डीएवी स्कूल में प्रधानाचार्य के रूप में अवैतनिक सेवा आरंभ की जिसे वह 25 वर्षों तक करते रहे। महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त थे। लाला हंसराज अविभाजित भारत के पंजाब के आर्य समाज के एक प्रमुख नेता एवं शिक्षाविद् थे। पंजाब भर में दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों की स्थापना करने के कारण उनकी कींती अमर है। देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए, 15 नवम्बर, 1936 को महात्मा हंसराज जी ने अंतिम सांस ली।

राजनेता स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय

बलिदान : 17 नवम्बर
शत्-शत् नमन

लाला लाजपत राय भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने वाले मुख्य क्रांतिकारियों में से एक थे। वह पंजाब केसरी (पंजाब का शेर) के नाम से विख्यात थे और कांग्रेस के गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल) में से एक थे। उन्होंने पंजाब नैशनल बैंक (पीएनबी) और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को दुधिके गाँव में हुआ था जो वर्तमान में पंजाब के मोगा जिले में स्थित है। वह मुंशी राधा किशन आज़ाद और गुलाब देवी के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनके पिता बनिया जाति के अग्रवाल थे। बचपन से ही उनकी माँ ने उनको उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी थी। लाला लाजपत राय ने बहुत से क्रांतिकारियों को प्रभावित किया और उनमें एक थे शहीद भगत सिंह। सन् 1928 में साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और 17 नवम्बर सन् 1928 को परलोक सिधार गए।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम धर्म के साक्षात् स्वरूप हैं। उनका चरित्र विश्व मानव के लिए आदर्श चरित्र है। भगवान श्रीराम के बाल्यकाल से लेकर प्रणयकाल तक की सम्पूर्ण लीलाएं धर्म व मर्यादा से ओत-प्रोत हैं। भगवान श्रीराम अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक परब्रह्म होते हुए भी पारिवारिक जीवन में मर्यादा का इतना उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत करते हैं कि समस्त विश्व उन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहकर संबोधित करता है।

भाइयों के प्रति प्रेम से उनका हृदय इतना द्रवित रहता था कि वे भाइयों के साथ खेलते समय स्वयं हार जाते लेकिन अपने भाइयों को हारा हुआ नहीं देख सकते थे। जब गुरुजनों एवं माता-पिता के बीच राज्याभिषेक की चर्चा चली तो सबका झुकाव श्रीरामजी की ओर था। तब रामजी सोचने लगे कि 'सब भाई एक साथ जन्मे, साथ-साथ सबका पोषण हुआ, साथ-साथ खाये-पीये, खेले-पढ़े फिर यह क्या कारण है कि एक ही भाई को राजगद्दी मिले?' वे हमेशा पहले भाइयों की सुख-सुविधा की बात सोचते, बाद में अपनी।

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम भगवान विष्णु के सातवें अवतार हैं, जिन्होंने त्रेता युग में रावण का संहार करने के लिए धरती पर अवतार लिया। कौशल्या नंदन प्रभु श्री राम अपने भाई लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न से एक समान प्रेम करते थे। उन्होंने माता कैकेयी की 14 वर्ष वनवास की इच्छा को सहर्ष स्वीकार करते हुए पिता के दिए वचन को निभाया। उन्होंने 'रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाय' का पालन किया। भगवान श्री राम को

डा. महेशाज घोलकर

मर्यादा पुरुषोत्तम इसलिए कहा जाता है क्योंकि इन्होंने कभी भी कहीं भी जीवन में मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। माता-पिता और गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए वह 'क्यों' शब्द कभी मुख पर नहीं लाए। वह एक आदर्श पुत्र, शिष्य, भाई, पति, पिता और राजा बने, जिनके राज्य में प्रजा सुख-समृद्धि से परिपूर्ण थी।

केवट की ओर से गंगा पार करवाने पर भगवान ने उसे भवसागर से ही पार लगा दिया। राम सद्गुणों के भंडार हैं इसीलिए लोग उनके जीवन को अपना आदर्श मानते हैं। सर्वगुण सम्पन्न भगवान श्री राम असामान्य होते हुए भी आम ही बने रहे। युवराज बनने पर उनके चेहरे पर खुशी नहीं थी और वन जाते हुए भी उनके चेहरे पर कोई उदासी नहीं थी। वह चाहते तो एक बाण से ही समस्त सागर सुखा सकते थे लेकिन उन्होंने लोक-कल्याण को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए विनय भाव से समुद्र से मार्ग देने की विनती की। शबरी के भक्ति भाव से प्रसन्न होकर उसे 'नवधा भक्ति' प्रदान की। वर्तमान युग में भगवान के आदर्शों को जीवन में अपना कर मनुष्य प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पा सकता है। उनके आदर्श विश्वभर के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

श्रीराम वैदिक संस्कृति और सभ्यता के आदर्श प्रतीक हैं। राम के जीवन में वैदिक संस्कृति का साकार रूप देखने को मिलता है। मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत जब हम विश्व के महापुरुषों के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो राम का जीवन सर्वोपरि जान पड़ता है। आज हजारों वर्षों से राम का पावन चरित्र लाखों लोगों को प्रेरणा और मार्गदर्शन दे

श्रीराम वैदिक संस्कृति और सभ्यता के आदर्श प्रतीक हैं। राम के जीवन में वैदिक संस्कृति का साकार रूप देखने को मिलता है। मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत जब हम विश्व के महापुरुषों के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो राम का जीवन सर्वोपरि जान पड़ता है। आज हजारों वर्षों से राम का पावन चरित्र लाखों लोगों को प्रेरणा और मार्गदर्शन दे रहा है।

रहा है। वाल्मीकि रामायण में (३/३७/१३) मारीच रावण से राम के गुणों का वर्णन करते हुए कहता है- रामो विग्रहवान धर्म: अर्थात श्रीराम धर्म के मूर्ति मान स्वरूप हैं। राम सत्य के आधार हैं और सत्य को सर्वस्व मानते हैं। सुमित्रा कहती हैं है- नहि रामात परो लोके विधते सत्पथ स्थित: (वाल्मीकि २/४४/२६) श्रीराम से बढकर सन्मार्ग में स्थिर रहनेवाला मनुष्य संसार में दूसरा कोई नहीं है।धर्मप्राण भारतीय जीवन दृष्टि, महान चरित्र और मानवीय आदर्श सबसे अधिक राम के जीवन में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। वाल्मीकि ने विभिन्न स्थलों पर राम को धर्मज्ञ:, धर्मस्य, परिरक्षक:, धर्मनित्य:, धर्मात्मा, धर्मवत्स्त्न:, धर्मभूतांवर: आदि शब्दों से संबोधित किया है। श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहा जाता है क्योंकि बचपन से जीवन पर्यन्त राम के जीवन का कोई भी भाग देखें तो उनके जीवन में कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन हुआ हो, ऐसा देखने को नहीं मिलता। ○○

ऋग्वेद में वर्णित विषनाशक औषधियों एवं जीवों का विवरण

डा. मंजु नारंग, डी.लिट.

अद्भुत ज्ञान के भंडार वेद परमपिता परमात्मा की अमृतवाणी है। इसका ज्ञान अनन्त एवं अगाध है। वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद नाम से चार हैं। विज्ञान की प्रधानता के कारण ऋग्वेद विज्ञान कांड है, कर्म की प्रभुता के कारण यजुर्वेद कर्मकाण्ड है, उपासना विषयक विवरणों के आधार पर सामवेद उपासना काण्ड है तथा ज्ञान प्रधान होने के कारण अथर्ववेद ज्ञानकण्ड है। चारों वेदों के वर्ण्य विषय पृथक-पृथक होने पर भी परमात्मा की विशिष्टताओं एवं महात्म्य का वर्णन चारों वेदों में समान रूप से प्राप्त होता है। चारों वेदों में ऋग्वेद प्राचीनतम तथा विशालतम है।

ऋग्वेद मण्डलों में विभाजित हैं तथा मण्डल सूक्तों में विभाजित है। इसमें दस मण्डल हैं। सूक्तों में मंत्र प्राप्त होते है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 191 सूक्त के मंत्रों में विष का हरण करने वाली औषधियों, विषहारक जीवों तथा विष के अपहर्ता गुरी वैद्यों के द्वारा निर्दिष्ट विष का विनाश करने वाले उपायों का वर्णन होता है।

ऋग्वेद में प्राप्त विवरण के अनुसार चपल व्यक्ति के द्वारा अध्यापकों तथा उपदेशकों के प्राप्त होने पर चंचलता करने के समान लघुकाय अदृष्ट मत्कुण तथा मच्छर इत्यादि क्षुद्र जीव पुनः पुनः निवारण किये जाने पर भी लिप्त होकर कष्ट पहुंचाते हैं–

अङ्कतो न कङ्कतोऽथो सतीनकङ्कतः।
द्वाविति प्लुषी इति न्यदृष्टा अलिप्सत।

ऋग्वेद 1-191-1

सम्यक् रूपेण प्राप्त औषधि विषधारी जीवों को विनष्ट करती है तथा उसको दूर करती है। अत्यधिक कष्टकारक यह औषधि विषधारियों को पीसती है तथा उनका विनाश करती है

अदृष्टान्हन्त्यायत्यथो हन्ति परायति।
अथा अवघ्नती कृत्यथो विनष्टि पिषती।

ऋग्वेद 1-191-2

विषधारी जीव, बॉस के अंदर, छिद्र युक्ततृणों में, दर्भ में, जलाशयों के तटों में तथा गर्तों में निवास करते हैं। ये सभी एक साथ प्राप्त हो जाते हैं। जिस प्रकार से गौशाला में गौएं निवास करती हैं, वन में मृगादि जीव निरंतर प्रवेश करते रहते हैं, मनुष्यों में ज्ञान बुद्धि प्रवेश करती है, उसी प्रकार से दृष्टिगोचर नहीं होने वाले विषधारियों के विष प्राणियों को प्राप्त हो जाते हैं। ऋग्वेद में इन विषधारी जीवों से प्रार्थना की गयी है कि सूर्य के सदृश संतप्त करने वाला इनका पिता, पृथिवी के सदृश माता, चंद्रमा के समान भ्राता तथा विद्वानों की अदीना माता के समान इनको बहिन स्व स्थान को प्रस्थान कर जाये। अर्थात् ये विषधारी जीव सपरिवार प्राणियों की रक्षा हेतु स्ववास स्थान से पलायन कर जायें–

शरासः कुशरासो दर्भासः सैर्याइत।
मौञ्जा अदृष्टा वैरिणाः सवे साकं न्यलिप्सत।
नि गावो गोष्ठे असदन्नो मृगासो अविक्षत।
नि केतवो जनानां न्यश्दृष्टा अलिप्सत।
द्यौर्वः पिता पृथिवी माता सोमो भ्रातादितिः स्वसा। अदृष्टा विश्वदृष्टास्तिष्ठतेलयता सुकम्। ऋग्वेद 1-191-3,4,6

इन विषधारी जीवों से रक्षा के लिए मनुष्यों से अपेक्षा की गयी है कि आत्मा को कष्ट पहुंचाने वाले विष का निराकरण करते हुए निरंतर पुरुषार्थ की वृद्धि करनी चाहिए। अतएव पार्थना की गयी है कि रोग निवारक सूर्य के प्रकाश के संयोग से विषहरण करने की विद्या के ज्ञाता वैद्य वृहद् औषधियों की सिद्धि के द्वारा विष को दूर करके माधुर्य की सिद्धि करें। केवल सूर्य की किरणों के अतिरिक्त विष हारक जीवों के द्वारा भी विष विनष्ट होता है।

विशिष्ट देशों में उत्पन्न होने वाली कपिञ्जली पक्षिणी विष का भक्षण कर लेती है, अतएव उसके शीघ्र विनष्ट नहीं होने की कामना की गयी है, जिससे हम लोगों का वध नही हो। ऋग्वेद में प्रार्थना की गयी है कि इस पक्षिणी के योग से विष का हरण होने के कारण हमको माधुर्य की प्राप्ति हो। वैद्यो को इस पक्षिणी के पोषण की विद्या का प्रयोग करने के लिए कहा गया है– **सूर्ये विषमा सजामि दृति सुरावतो गृहे। सो चिन्नु मारुति नो वयं मरामरे अस्य योजनं हरिष्ठा। मधुत्वा मधुला चकार। इयत्रिका शकुन्तिका रका जघास ते विषम्। सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामारे अस्य भोजनं हरिष्ठा। मधुत्वा मधुला चकार।**

ऋग्वेद 1-191-10,11

ऋग्वेद में प्रार्थना की गयी है कि इक्कीस प्रकार की लघुकाय चिड़िया विष के पुष्ट होने योग्य पुष्प का भक्षण करती हैं, वे भी मृत्यु को प्राप्त नहीं होती। हम लोग श्रेष्ठ वैद्य के विष के योग को विलीन करने वाली विद्या के प्रयोग के कारण प्राप्त नहीं हो, क्योंकि विष का हरण करने वाली विष विद्या से माधुर्य की प्राप्ति होती है। OO

व्यक्ति के जीवन और मृत्यु का सत्य

विवेक शास्त्री

प्रतिदिन सूर्य जब भी उदय होता है तो वह हमें सचेत करता है कि अंधकार से प्रकाश की ओर चलो। मृत्यु भी ऐसे ही एक जीवन से तोड़ती है आर दूसरे जीवन से जोड़ देती है। मृत्यु आत्मा की सबसे सजग पहरेदार है। वह एक पल भी हमसे दूर नहीं होती, सदा साथ-साथ रहती है

जब व्यक्ति का जन्म होता है, तब व्यक्ति अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं आता लेकिन बाद में व्यक्ति अपने जीवन में धन के प्रति आकर्षित होता चला जाता है और धन के लोभ में ही अपना जीवन समाप्त कर लेता है। जन्म से पहले भी हमारे पास धन नहीं था और मृत्यु के पश्चात भी धन हम अपने साथ नहीं ले जाते। सभी को सब कुछ यहीं छोड़कर जाना है और एक दिन मृत्यु के कालचक्र के गले लग जाना है। संस्कृत के एक कवि ने मानव का सांसारिक चित्र इस प्रका दिखाया है-

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः। इत्थ विचिन्तयति कोशगते द्विरफे, हा! हन्त! हन्त! नलिनींगज उज्जहार॥

लोभी भ्रमर (भौरा) कमल के फूल पर बैठा इस तरह से मस्त से मस्त व बेसुध हो गया कि उसे यह भी पता नहीं चला कि सूर्य कब अस्त हो गया। प्रकृति का नियम है कि सूर्य के उदय होने पर कमल खिल उठता है और सूर्य के अस्त होने पर बंद हो जाता है। अब कमल के फूल के अंदर बैठा हुआ भौरा सोच रहा है कि 'जैसे ही रात्रि बीतेगी, तत्पश्चात सवेरा होगा, सबेरा होने के बाद सूर्य उदय होगा जैसे ही सूर्य उदय होगा वैसे ही कमल खिलना प्रारम्भ हो जाएगा और ज्यों ही कमल खिलेगा मैं इस कमल के पुष्प से बाहर उड़ जाऊंगा। लेकिन भ्रमर यह विचार कर ही रहा था कि एक हाथी उधर से आता है और कमल को जल से उखाड़कर खा जाता है। भ्रमर का जीवन समाप्त हो जाता है। ठीक ऐसी ही स्थिति आज के हम सांसारिक लोगों की हो रही है। हम पूर्ण जीवन भर दिन-रात मेहनत करके भोग पदार्थों व सुखों के साध्यों को जुटाने में लगे रहते हैं। आम आदमी अपनी पूरा जीवन, सारी उम्र धन एकत्रित करने में निकाल देता है। समय का एक ऐसा झोका आता है कि इस संसार में हमने जो भी एकत्रित किया है सब कुछ छोड़ के जाना पड़ता है।

प्रतिदिन सूर्य जब भी उदय होता है तो वह हमें सचेत करता है कि अंधकार से प्रकाश की ओर चलो। मृत्यु भी ऐसे ही एक जीवन से तोड़ती है आर दूसरे जीवन से जोड़ देती है। मृत्यु आत्मा की सबसे सजग पहरेदार है। वह एक पल भी हमसे दूर नहीं होती, सदा साथ-साथ रहती है। जैसे-जैसे आरी लकड़ी को धीरे-धीरे काटती है, वैसे-वैसे काल भी हमें काट रहा है।

महाभारत में आता है 'कालः पचति भूतानि' सारे संसार के प्राणियों को काल धीरे-धीरे पका रहा है। अर्थात सभी को मृत्यु की ओर ले जा रहा है। संसार के हर प्राणी को एक ना एक दिन मृत्यु को गले अवश्य लगाना है और यह संसार का कटु सत्य नियम है, इसे कोई नकार नहीं सकता, लेकिन मनुष्य आज भी मृत्यु से भागने का प्रयत्न करता रहता है, पर एक ना एक दिन मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है। संसार में आज हर एक रोग की दवा बनकर तैयार हो चुकी है, लेकिन मृत्यु एक ऐसा रोग है, जिसकी आज तक कोई दवा नहीं बन सकी। मनुष्य ने आज विज्ञान की तकनीक के द्वारा बहुत कुछ बना लिया लेकिन मनुष्य के शरीर में आत्मा नहीं डाल सका। मनुष्य को दोबारा जीवित नहीं कर सका। जिसे मृत्यु ने एक बार गले लगाया उसे दोबारा जीवित नहीं कर सका।

यह सृष्टि मरणधर्मी है, इस अटल एवं सत्य नियम को हम रोज देखते हैं व अनुभव करते हैं। यह जगत धीरे-धीरे विनाश की ओर बढ़ रहा है, यह हम प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं। जिस दिन कोई वस्तु बनती है, उसी दिन से उसमें पुरानापन आरम्भ हो जाता है। हम प्रतिपल मृत्यु की ओर जा रहे हैं। कोई मरना नहीं चाहता है, फिर भी लोग दिनरात मृत्यु को प्राप्त हो रहे है। वेद कहता है- जब वृक्ष पर फल पक जाता है तो उसे वृक्ष छोड़ना ही पड़ता है। ऐसे ही जब शरीर में जीवन शक्ति क्षीण हो जाती है, इंद्रियां कार्य करना बंद कर देती हैं, शरीर साथ नहीं देता, तब इंसान को मजबूरी में शरीर को छोड़ना ही पड़ता है। मृत्यु के आगे न बलवान, न धनवान, न बुद्धिमान न ज्ञानी कोई नहीं टिकता वे सब मृत्यु के साथ चुपचाप चल पड़ते हैं। यह शरीर किराये का है, एक दिन खाली करना ही पड़ेगा। मृत्यु के आगे किसी का अहंकार, हठ व बल नहीं चलता है।

राम गयो रावण गयो, जाके बहु परिवार, कहु नानक फिर कछु नहीं, सुपने सा संसार।।

1. 'ओउम क्रतो समर' सदा ओउम का, परमेश्वर के मुख्य निज नाम का स्मरण करो। 2. 'क्लिवेस्मर' अपने स्वरूप तथा सामर्थ्य का स्मरण करो। 3. 'कृतं स्मर' अपने किये हुए कर्मों का चिंतन करो।

प्रार्थना : 'धियो यो नः प्रचोदयात्'- हे प्रभो! हमारी बुद्धि और कर्मों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करो। OO

GLOBAL HARMONY AND PEACE

Article By Mahatma Gopal Swami Sarswati

Modernization has given totally different connotations for castes, creeds and communities. Religion, instead and narrow-minded. Aggressiveness and terrorism coupled with violence have become the order of the day. The unfortunate part is, that the so-called sacred books of some communities tend to spread hatred and violence against the non-believers or the members of other communities; little realizing that the world Economy has gradually become global and no country or community can afford to develop outside it. Not only the economy, the prolems relating to even ecology and environment have also become global. There is talk of global warming and global diminution of ground water level all over the world.

So, no country can now solve even its ecological and environmental problems in isolation with other countries. Social security of mankind, in the modern context, also needs a common rule of law, a collective approach for global equality with due regards to human rights and human values. The question arises, how global harmony and peace can be achieved?

Firstly, it needs to be acknowledged, that the so-called riligions of the world, particularly those, which have come up during the last 3,000 years' period, are not and cannot be of any help to us, because their Founders, due to their own limitations, personal traits, beliefs and prejudices, could make them only cult-oriented and not humanitarianism-oriented. The 'Bible' and 'Kuran' for instance, through some of their sayings, differentiate human beings into two broad categories,...viz, 'believers' and 'non-believers' and while the 'believers' are considered to be the right choice for their cult or religion, the 'non-believers' are meant only to be condemned, damned, and even killed.

In search of a code of conduct, which has an universal relevance and appeal to all without and distinction of caste, creed, race, nationality, etc and puts forth the philosophy of humanitarianism, we have no option but to go back, and back, till we come acress Vedas. Only vedas as thename implies, are pure knowledge, a gift of God to the human beings revealed alongside the creation of the universe for the benefit of the entire mankind. There is no substitute of Vadas insofar as the code of human behavior and conduct is concerned. The tremendous progress, that the human mind has been able to make in the field of learning and knowledge and all-bliss, imparted true knowledge with regard to every aspect of human behaviour and activity and of all things and objects that are to be known through knowledge in the form of Vedas.

No wonder, therefore, how much right was the most dynamic amongst the personalities of the 19th century renaissance, viz, Maharishi Swami Dayananda Saraswati, when he proclaimed that the 'Vedas are the treasurehouse of all true knowledge and all that is knowable through knowledge, the prime source is only God Almighty.

'Swami Daynanda Saraswati, through his vision and unrelenting pursuit of Truth, succeeded in resurrecting the glory of Vedas and revealing their true import pointedly for the humanity at large. Swami Dayananda's statements were further fortified by Yogiraj Aurobindo Ghosh, who in his writings stated...'the ancient civilization did possess secrets of sciences, some of which modern knowledge has recovered. extended and made rich and precise, but others are even now not recovered.

हिन्दी भाषा का गौरव

सन् 1976 की घटना है कि मैं प्रतिदिन की तरह घर के सभी कार्यों से निबट कर विश्राम करने के लिए अखबार लेकर चटाई पर लेट गई। उस समय घर के सभी कार्य औरतों को ही करने होते थे, अत: थकावट भी हो जाती थी, समय भी काफी व्यतीत हो जाता था। कुछ प्रतिशत स्त्रियां ही अखबार पढ़ती थी। किसी दिन मेरी किसी महानुभाव से बातचीत हो रही थी तभी मैंने अखबार की कोई बात की, तो वह बड़े आनंदित हुए और कहने लगे आप प्रतिदिन अखबार पढ़ती हैं।

खास बात यह है कि अचानक मेरी अखबार के पिछले पृष्ठ पर नीचे के कॉलम पर निगाह गई तो मैं देखती हूं कि भारत सरकार के शिक्षा निदेशालय का एक विज्ञापन छपा है। जिसकी एक-एक पंक्ति पर विचार किया। मैंने देखा सभी नियम मेरे पुत्र पर उचित बैठते हैं। जैसे आयु, शिक्षा, पिता की आय इत्यादि।

घर में सबसे बातचीत की विचार-विमर्श किया और आगे की कार्यवाही पर विचार किया। मैंने शिक्षा विभाग में बच्चों को भेजकर फार्म मंगाया और अपने पतिदेव से

माता ओमवती गुप्ता

भरवा कर जमा करा दिया और निश्चिंत हो गये।

कुछ महीने पश्चात शिक्षा विभाग से एक पत्र आता है। जिसके द्वारा पता चलता है कि बेटे को परीक्षा अर्थात लिखित पेपरों के लिए बुलाया है। पेपर पास होने पर मौखिक साक्षात्कार के लिए बुलाया, हम सभी अति प्रसन्न थे। साक्षात्कार में भी बेटा पास हो गया। उसके कर्म उज्जवल थे। आगे की राह आसान होती गई।

बाद में पता चला कि वह परीक्षा पूरे भारतीय स्टैंडर्ड की थी। भारत सरकार प्रतिवर्ष पूरे देश से केवल दो ही बच्चों को चुनती थी। यह सभी कार्यवाही छठी कक्षा से बारहवीं कक्षा के लिए थी। भारत वर्ष के सबसे उत्तम स्कूल में पुत्र का प्रवेश हो चुका था। हमने कभी इतने बड़े स्कूल का नाम भी नहीं सुना था और सोचा भी नहीं था कि ऐसा भी समय आयेगा, क्योंकि हम मधयम परिवार के हैं।

हमको कुछ परेशानी आई पर हम हिम्मत नहीं हारे। आगे पढ़ाई उत्तम से उत्तम होती गई। आज वहीं घर का नाम रोशन कर रहा है। बड़े से बड़ा सुख हमको मिल रहा है। उसका परिवार भी सुखी और मां, बहिन, भाई आदि सभी प्रसन्न हैं। मेरी इस घटना को लिखने का तात्पर्य यह है कि कुछ छोटी-छोटी घटनाएं हमें कहां से कहां पहुंचा देती हैं।

मैं आपको बताना भूल गई कि यह क्षात्रवृत्ति योजना थी लेकिन किसी नासमझी के कारण पूरा खर्चा स्वयं ही वहन करना पड़ा। बड़े-बड़े स्कूलों की फीस बहुत अधिक होती है। मध्यम परिवार के लिए कुछ अधिक ही कठिन होता है अत: इस चित्र को लेखनी द्वारा उद्धृत करने का अर्थ है कि जिस हिंदी भाषा की सभी उपेक्षाएं करते हैं आज उसी हिंदी भाषा के साधारण अखबार ने इतना बड़ा काम कर दिखाया। अत: हमें सदा ही मातृ भाषा का सम्मान करना चाहिए। हिंदी भाषी अपने को कमजोर न समझे। ओ३म!

अनमोल विचार

- हमें पता होना चाहिए कि भाग्य भी कमाया जाता है और थोपा नहीं जाता, ऐसी कोई कृपा नहीं है जो कमाई ना गयी हो।
- अगर आप पर हमेशा उंगली उठाई जाती रहे तो आप भावनात्मक रूप से अधिक समय तक खड़े नहीं हो सकते।
- कोई भी मानव हृदय सहानुभूति से वंचित नहीं है, कोई धर्म उसे सिखा-पढ़ा कर नष्ट नहीं कर सकता, कोई संस्कृति, कोई राष्ट्र कोई राष्ट्रवाद- कोई भी उसे छू नहीं सकता क्योंकि ये सहानुभूति है।
- छात्र की योग्यता ज्ञान अर्जित करने के प्रति उसके प्रेम, निर्देश पाने की उसकी इच्छा, ज्ञानी और अच्छे व्यक्तियों के प्रति सम्मान, गुरु की सेवा और उनके आदेशों का पालन करने में दिखती है।

आचमन मंत्रों की चर्चा

संतोष नंदवानी, मयूर विहार, दिल्ली

हम समस्त आर्य भाई-बहन यज्ञ प्रारम्भ करने पूर्व तीन मंत्रों के द्वारा आचमन करते हैं अतः इनका नामकरण आचमन मंत्र कर दिया गया। ऋषि-मुनियों का कथन है कि यज्ञ करने से पूर्व अपने हृदय को प्रभु के सानिध्य में लाएं। पवित्र जल के माध्यम से आत्मा का ध्यान उस परमपिता के प्रति मंत्रोच्चारण द्वारा किया जा सकता है। परंतु देखने में आया है कि यह कार्य एक यंत्रवत् कार्यक्रम बनता जा रहा है। कारण- हम नहीं जानते कि देवयज्ञ में इनका क्या महत्व है, क्या विधि है तथा इनके उच्चारण करने का क्या प्रयोजन है?

आइए इनके सबंध में कुछ चर्चा करें- सर्वप्रथम तो हम जल द्वारा ही आचमन क्यों करते हैं इसके संबंध में कुछ जानकारी प्राप्त करें। वेदों के अनुसार 'अप्सु विश्वानि मंषजः' अर्थात् जल समस्त रोगों क औषधि है। जल का गुण है- आद्रता, यह शुष्क कंठों को तरल कर देता है। ऋषि याज्ञवल्क्य का कहना है कि- तेनहि पूतिन्तता मेघ्या हवै आपा मेध्यो भूत्वा व्रतमुपयाति। अर्थात् जल मेधा को पवित्र करता है तथा परोपकार के भावों से परिपूर्ण अंत:करण को पवित्र कर देता है।

जल का स्वभाव है नम्रता : जैसे भी डालो नीचे की ओर ही बहता है। इससे मानव को प्रेरणा मिलती है कि हमें नम्र होकर ही रहना चाहिए। हिमाचल की ओर जाएं तो खेल खलिहानों में स्त्रियां मजदूरी करती हुई गाती हैं-

नींवा होके चल बन्दया, नींवयां नू रब मिलया। नईयो जिंदगी दा कोई विसाह, नीवां हो के चल वंदया।।

अब इसकी विधि की ओर दृष्टिपात करें - इस पवित्र जल को (दक्षिण) दाहिने हाथ के तल पर लेकर उसके मध्य प्रदेश में (बीच में) ओठ लगाकर जल को पीजे को 'आचमन' कहते हैं। जल इतना होना चाहिए कि कंठ तक ही जाए। इसको करने के पश्चात् सिर पर स्पर्श नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को करने पर शुष्क कंठ आर्द्र हो जाए तथा मंत्रों का उच्चारण अच्छी प्रकार हो सके। (आलस्य दूर होना)।

अग्निहोत्रम् प्रकरण के आरंभ में ही ये तीन मंत्र दिए गये हैं। कुछ विद्वान इसे मानसिक, राजसिक एवं तामसिक रूप में लेते हैं। परंतु अधिकतर हम इनका अर्थ निम्न प्रकार से लेते हैं जो कि संस्कृत वेद वाङ्मय के अनुसार ही है।

प्रथम मंत्र- 'ओ3म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।'

इस मंत्र में 'उपस्तरण' का अर्थ है 'बिछौना'। परंतु बिस्तर नहीं, इससे आशय आधार, आश्रम है जिसे प्राप्त करके व्यक्ति शांति एवं निश्चिंतता का अनुभव करता है, चैन की नींद सोता है। जब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में तो फिर मैं चिंता क्यों करूं? वह परमपिता तो सम्पूर्ण जगत का आधार है फिर क्यों न सब आनंद की अनुभूति करें। इसके लिए हमें उस प्रभु का खुले दिल से धन्यवाद करना चाहिए। इस अमूल्य उपहार अपने जीवन को सुंदर रूप प्रदान करें, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

द्वितीय मंत्र है- ओ3म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।

इस मंत्र में उस परमपिता परमात्मा के लिए 'अपिधानम् असि' प्रयोग किया गया है अर्थात् अच्छादक वस्त्र के समान। अर्थात् ओढ़ना जिसे हम चादर या कम्बल कहते हैं परंतु इसका अर्थ हुआ सब ओर से, चहुंओर सुरक्षित रहूं। प्रभु की कृपा बनी रहे।

तृतीय मंत्र है- ओं सत्यं यशः श्रीमयि श्री श्रयताम् स्वाहा।

अर्थात् हम सत्य, यश, श्रीधन समृद्धि आदि समस्त गुणों से सम्पूर्ण बनें, इसके साथ ही वाह्य सुख ऐश्वर्य से भी ओतप्रोत हो, उन्हें ग्रहण करने वाले हों।

इसमें 'श्री' पद का दो बार प्रयोग हुआ है। इससे आशय है हम अंर्तवाह्य दोनां प्रकार के श्रीगुणों से सम्पन्न हों।

संस्कृत वाङ्मय में 'श्री' पद के अनेक पर्यायवाची शब्द दिए गये हैं। जैसे- शोभा, कान्ति, प्रतिष्ठा, गौरव, समृद्धि आदि परंतु 'श्री' से अधिकतर 'धन' का ही अर्थ लिया जाता है। याज्ञिक परम्परा के अनुसार प्रत्येक मंत्र के अंत में 'स्वाहा' शब्द का प्रयोग होता है। ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार मंत्रों के अंत में 'स्वाहा' उच्चारण के बिना आहुति देना व्यर्थ है। यज्ञ के योग्य उत्तम स्थान में इस यज्ञीय अग्नि के मुख में स्वाहा पूर्वक डाली गयी 'हवि' को, आहुतिको देवतागण ग्रहण करें, इस श्रद्धा एवं भावना से आहुति प्रदान की जाती है। संक्षेप में इनका अर्थ यह हुआ कि इन तीनों मंत्रों के द्वारा चहुं दिशि सुरक्षित आश्रय प्राप्त करके यश, प्रतिष्ठा एवं धन सम्पदा से ओतप्रोत होकर पूर्णतया शांति एवं आनंदपूर्वक जीवन यापन करें।

वास्तव में 'स्वाहा' तो समर्पण की भावना एवं त्यागरूपी 'हवि' का प्रतीक है। 'इदंन मम' का सार्थक पर्याय है।

इन तीनों आचमन मंत्रों में आलंकारिक शैली में ईश्वर की स्तुति एवं प्रार्थना का उद्‌बोधन है। इन भावनाओं को हृदयंगम करते हुए, इनके गहन अर्थों को जानकर यदि हम यज्ञ करते हैं तो कोई कारण नहीं इनका परिणाम हमारे जीवन में रंग न लाए। परिणाम स्वरूप हमारा तारतम्य उस परमपिता परमात्मा से जुड़ने लगता है और हमारा जीवन उत्तम एवं सरल प्रतीत होने लगता है।

ईश्वर हमें सामर्थ्य दे ताकि हम सब इस मार्ग की ओर प्रेरित हों।

।। ओ3म् शान्ति।।

जमाने को सच्चा सखा मिल गया

जमाने को सच्चा सखा मिल गया।
दयानन्द सा देवता मिल गया।।

ये नैया वतन की भंवर में पड़ी।
खड़ी सामने थी मुसीबत बड़ी।
अचानक इसे ना खुदा मिल गया।।

तरफदार कन्याओं अबलाओं का।
हितैषी अनाथों का विधवावों का।
हमें राह में रहनुमा मिल गया।।

परेशानियों मन्दे हालों के बाद।
बिछुड़ा पड़ा बहुत सालों के बाद।
कि बच्चों को उनका पिता मिल गया।।

धर्म देश जाति की भक्ति मिली।
नई जिन्दगी नई शक्ति मिली।
'पथिक' क्या कहे क्या से क्या मिल गया।।
जमाने को सच्चा सखा मिल गया।
दयानन्द सा देवता मिल गया।।

➲ सत्यपाल 'पथिक'

कैसे हो उपकार...

कैसे हैं आसार जगत को देखो ना।
मच रहा हाहाकार जगत को देखो ना....।।

रिश्वतखोरी चोरा-चोरी, धोखाधड़ी है तेरी मेरी।
यही है सबका सार जगत को देखो ना....।।

माता-पिता की सेवा ना करते, दुर्व्यसनों दूरितो में फसते।
कैसे हो उद्धार जगत को देखो ना....।।

पाप-पुण्य को ना वो समझते, कर्म है खोटे रहे वो करते।
ईश्वर जग आधार, जगत को देखो ना....।।

भाई-बन्धु सखा सहायक, दाता ही है सबका नायक।
करो प्रभु से प्यार जगत को देखो ना....।।

आपस का है ना कोई नाता रहे 'विवेक' सबको समझाता।
कैसे हो उपकार जगत को देखो ना....।।

➲ विवेक शास्त्री, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

प्रभु से लगन

जरा प्रभु से तू लगन लगा कि होगा बेड़ा पार तेरा।
कभी दिल ना किसी का दुखा कि होगा बेड़ा पार तेरा।।

इहलौकिक मोहमाया हमें बांधकर रखती,
चमक यहां की दूर प्रभु से है करती।
उठ प्रातःकाल ध्यान लगा कि होगा बेड़ा पार तेरा।।

आत्मा हमारी जानो कभी नहीं मरती,
नश्वर शरीर को ये धारण करती।
दिव्य ज्ञान का दीप जला, कि होगा बेड़ा पार तेरा।।

निष्काम कर्म कर और फल की इच्छा मत रख,
योग द्वारा जीवन को तू सदा ही तपाया कर।
वेद धर्म ने यही है कहा कि होगा बेड़ा पार तेरा।।

हवन यज्ञ करके संवार तू जीवन अपना,
पर्यावरण शुद्ध हो ये था ऋषि का सपना।
मन मंदिर में ज्योति जगा कि होगा बेड़ा पार तेरा।।

स्वर्ग और नरक सभी यहीं पर है दिखते,
'जीव' को सदा ही उसके कर्म फल मिलते।
'गुप्त' नहीं है कोई भी विधा कि होगा बेड़ा पार तेरा।।

➲ विनोद प्रकाश गुप्त

वेद सृष्टि.....

प्रो. प्रताप सिंह

मानव पशु, पक्षी आदि के समान भोग योनी में तो है परंतु नये कर्म करने में स्वतंत्र भी है। मानव का स्वभाविक ज्ञान अल्प तो है ही परंतु पशु, पक्षियों से हीन कोटि का ही माना जाता है। अत: मानव को नैमित्तिक ज्ञान की परम, आवश्यकता है। वह बिना दूसरे से या दूसरे के कुछ सिखाये स्वयं सीखने में असमर्थ है। इस पर संसार के विद्वान सहमत हैं।

माता, पिता व आचार्य से ही मानव ज्ञानी बनता है। आदि मानव के जन्म पर उसे सिखाने के लिए इन तीनों में से कोई भी संस्था नहीं थी। योग दर्शन सूत्र 1-26 स, पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्। वह गुरुओं का भी गुरु क्योंकि उसका ज्ञान काल की परिधि से तीनों कालों से है, असीम है। इसी कारण सूत्र 1-25 में उस परमात्मा को सर्वज्ञ बीजम् कहा है। वही सब ज्ञान का आदि मूल है। सृष्टि में परमात्मा ने मानव को शरीरतः तथा विद्यात: दोनों प्रकार से परिपूर्ण कर जन्म दिया। यह आदि गुरु परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वत्र होने से आदि मानव उसके गुरु रूप उदर में थे। सृष्टि का आदि संविधान 'वेद' है। ऋग्वेद मंत्र 10-72-2 'ब्रह्मणस्पति रेता स कर्मान् खाद्यमत्' वाणियों के स्वामी परमात्मा ने इन वाणियों-वेद को लुहार के समान ऋषियों के कानों में फूंकी। तब ऋग्वेद मंत्र 10-90-9 'तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋच्: सामानि जिज्ञरे। छंदासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद-जायत।' उस परमात्मा से ऋक् यजुः साम तथा अथर्ववेद उत्पन्न हुए।

मनु महाराज तथा शतपथाकार ने अग्नि ऋषि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, आदित्य से सामवेद तथा अंगिरा ऋषि से अथर्ववेद की उत्पत्ति कही है। मनुस्मृति 12-94 में 'पितृ देव मनुष्याणां वेदश्चक्षु सनातनम्' कहा गया है कि मानव के लिए वेद सनातन चक्षु है, पथ प्रदर्शक है। परमात्मा ने यह वेद ज्ञान रूपी हवि कर्मात्मा पुरुष को हृदय वेदी में आहुति, सृष्टि आरम्भ में दी। प्रलय पर यह ज्ञान रूपी हवि वेद ज्ञानमात्र परमात्मा में रहता है। यह वेद ज्ञान रूपी चक्र अनादि काल से चलता है, आ रहा है तथा चलता रहेगा।

वेद को श्रुति, मंत्र निगम, आगम, ऋषि ब्रह्म, छंद, शास्त्र, संहिता, दैवी वाक् आदि नामों से पुकारा जाता है। विद धातु से वेद शब्द सिद्ध होना है। इसका अर्थ ज्ञान है। वेद को कहीं वेदत्रयी, कहीं त्रय कहा है। कहीं-कहीं 'चात्वारों वेदः' कहा है। वेद को तीन व चार की संज्ञा दी जाती है। वेद में तीन प्रकार के ही मंत्र है। पद्यबद्ध मंत्रों का ऋग्वेद में बाहुल्य है, गद्यबद्ध मंत्रों का बाहुल्य यजुर्वेद में, तथा गीतिबद्ध मंत्रों का बाहुल्य सामवेद में है। अत: त्रय व त्रयी- तीन का कथन है। अथर्वेवेद में किन्हीं विशेष मंत्रों का बाहुल्य नहीं है। विषय भेद से वेद चार है। ऋग्वेद में विज्ञान, यजु में कर्म, साम में उपासना तथा अथर्ववेद में विज्ञान का कथन है।

प्रत्येक मंत्र पर चार शीर्षक ऋषि, देवता छंद व स्वर लिखे होते हैं। मंत्रों पर लगा दूसरा शीर्षक उस मंत्र का 'देवता' है। यह मंत्र का विषय है। किसी चित्र व लेख आदि के नाम शीर्षक अनेक हो सकते हैं। चित्र एक शीर्षक अनेक, कविता एक शीर्षक अनेक, समस्या एक समाधान अनेक आदि हो सकते हैं। निरुक्त में कहा है 'दीपनाद वा द्योतनाद् वा देवः ता।' जो दीपक के समान प्रकाश करे यह देवता जो सत्यार्थ का प्रकाश करे वह देवता है।

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 24 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221

आत्मा की अमरता

पं. रामगोपाल शास्त्री

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पंडिताः॥

युद्ध के समय जब श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बने हुए थे, तब अपने सामने अपने बंधु-बांधवों और गुरुओं को देख करके अर्जुन के हृदय में विषाद उत्पन्न हो गया। इस विषाद के कारण गांडीव धनुष को रखकर अर्जुन ने श्रीकृष्ण को कहा कि भगवन्! अपने ही संबंधियों को माकर रक्तरंजित भोगों का उपभोग नहीं करूंगा। इस विषय काल में अर्जुन की नपुंसकता और अनार्यता को देखकर, श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि, हे कुंतीपुत्र! तू इस काल में बड़े-बड़े ज्ञानियों की बातें करने लग पड़ा है। तुझे विदित होना चाहिए कि कर्त्तव्य कर्म करने वाले पंडित लोग मरे हुओं का और जीवतों का शोक नहीं करते इसलिए तेरा शोक करना वृथा है।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मह्यति॥

हे अर्जुन! इस देहधारी आत्मा की इस शरीर में तीन प्रकार की अवस्था देखी जाती है- बालपन, यौवन और बुढ़ापा। इन अवस्थाओं में शरीर के आकार में परिवर्तन आते हैं, परंतु आत्मा परिवर्तित नहीं होती। यह निर्विकार और अपरिणामी है। जिस प्रकार इस शरीर की तीन अवस्थाएं हैं, वैसे ही मरने के अनंतर दूसरी देह की प्राप्ति इसकी चौथी अवस्था है। इसलिए जीवन और मृत्यु के संबंध में ज्ञानी पुरुष मोहित नहीं होता।

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शारीरिणः। अनाशिनोऽप्रेमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥

हे अर्जुन! यह शरीर में जो आत्मा स्थित है, वह नित्य और अविनाशी है। उस आत्मा का माप और वर्णन नहीं किया जा सकता। यह देह अनित्य है और इस आत्मा के अनेक जन्मों में अनेक देह होते हैं। इसलिए तू युद्ध कर, धर्मयुद्ध करने में कोई दोष नहीं।

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्। उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते॥

जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है और जो इसे मारा गया जानता है, वे दोनों ही नहीं जानते, क्योंकि वह आत्मा न स्वयं किसी को मारता है और न ही स्वयं मारा जाता है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः। अजोनित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

हे अर्जुन! यह आत्मा किसी माल में भी जन्म नहीं लेता, और न ही इसकी मृत्यु होती है। शरीर से आत्मा का संयोग जन्म और शरीर से वियोग मृत्यु है। जब प्राणी मर जाता है तो लोग समझते हैं कि इसका जीवात्मा मरने के अनंतर फिर उत्पन्न नहीं होगा। यह भूल है, प्रत्युत यह आत्मा अनेक बार शरीर धारण करता और शरीर छोड़ता रहता है। यह नित्य है। सदा से इसी प्रकार चला आ रहा है। शरीर के नष्ट होने पर भी यह अविनाशी आत्मा कभी भी नष्ट नहीं होती। इस आत्मा को अमर समझ करके तुम युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानिगृह्लाति नरोऽपराणि। तथाशरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

हे अर्जुन! जिस प्रकार पुरुष पुराने कपड़ों को उतारकर दूसरे नये वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही जीवात्मा भी उन वस्त्रों की भांति पुराने शरीरों को छोड़कर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता रहता है। जिस प्रकार पुराने वस्त्रों को उतार कर, नये वस्त्रों को धारण करने वालों को शोक नहीं होता, उसी प्रकार तू भी युद्ध में मर जाने पर शोक मत कर, क्योंकि आत्मा नित्य है, वह तो चोला बदलता है मरता नहीं।

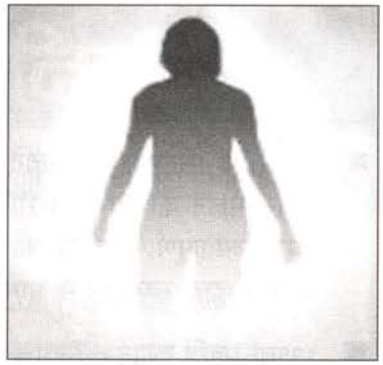

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

हे अर्जुन! यह आत्मा सूक्ष्म है, शस्त्रों से काटा नहीं जाता, अग्नि की ज्वाला इसे जला नहीं सकती। जल इसे गीला नहीं कर सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती। यह अत्यंत सूक्ष्म और अमर आत्मतत्व है।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रवं जन्म मृतस्य च। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शेचितुमर्हसि॥

हे अर्जुन! जो संसार में जन्मता है उसका मरना भी निश्चित है और जो मरता है उसका फिर जन्म होना भी निश्चित है। यह ईश्वरीय नियम ऐसा ही है, जिससे कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता। इसलिए इस निश्चिय होने वाले प्राकृतिक नियम में तेरा शोक करना वृथा है। नहीं लड़ेगा तो फिर भी कुछ वर्षों के अनंतर तेरा यह शरीर अवश्य छूट जायेगा और युद्ध में सामने खड़े योद्धा भी समय पाकर इन अपने शरीरों से पृथक हो जायेंगे, फिर तुम्हें और इन्हें और शरीर प्राप्त हो जायेगा।

जब मरने और जन्मने का नियम अटल है, तो फिर शोक किस बात का? इसलिए उठो और इस धार्मिक युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। OO

समाचार - सूचनाएं

- 25 से 28 सितम्बर को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व केंद्रीय सभा के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन रोहिणी, दिल्ली में किया गया। भारत सहित विदेशों के 34 देशों के प्रतिनिधियों द्वारा भव्यतापूर्ण सम्मेलन को सफल बनाया गया। आर्य समाज नोएडा द्वारा सभी सदस्यों, ब्रह्मचारियों, आचार्यों द्वारा सम्मेलन में भाग लिया गया।
- 135वां महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस का भव्य आयोजन 7 नवम्बर को रामलीला मैदान में किया गया जिसमें अनेक संस्थानों, समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा महर्षि के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित किये गये।
- केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में दिल्ली हाट पर भव्य संगीत संध्या का आयोजन किया गया।
- 5 से 9 दिसम्बर को आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा का वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अनेक संन्यासी वृंद, विद्वान, राजनेता, भजनोपदेशकों को सादर आमंत्रित किया गया है। सपरिवार आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।
- आर्यसमाज नोएडा की मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' के सदस्य बनकर अपने जीवन को पुष्पित पल्लवित करें। मानव जीवन मूल्यों की संरक्षक मासिक पत्रिका की सदस्यता वार्षिक 250/-, पांच वर्ष 1100/-, आजीवन 2500/- है।

अनमोल विचार

- लोगों को भगवान् को जानना और उनके कार्यों की नक़ल करनी चाहिए। पुनरावृत्ति और औपचारिकताएं किसी काम की नहीं हैं।
- अपने सामने रखने या याद करने के लिए लोगों की तस्वीरें या अन्य तरह की पिक्चर लेना ठीक है। लेकिन भगवान् की तस्वीरें और छवियां बनाना गलत है।
- आत्मा अपने स्वरूप में एक है, लेकिन उसके अस्तित्व अनेक हैं।
- मोक्ष पीड़ा सहने और जन्म-मृत्यु की अधीनता से मुक्ति है, और यह भगवान की अपारता में स्वतंत्रता और प्रसन्नता का जीवन है।
- भगवान का ना कोई रूप है ना रंग है, वह अविनाशी और अपार है, जो भी इस दुनिया में दिखता है वह उसकी महानता का वर्णन करता है।

सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद!

कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2018 को समाप्त हो गया है फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

- **प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221**

आर्यसमाज के दस नियम

सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

नीम में बड़े-बड़े गुण

औषधीय गुणों से भरपूर 'नीम' न केवल मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह पशुओं, कृषि, पर्यावरण और उद्योगों की आवश्यकताओं को भी पूरा करता है। इसी के मद्देनजर इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव (इफको) ने व्यापक पैमाने पर इसके पेड़ लगाने का अभियान शुरू किया है। नीम की पत्ती और बीज एंटीसेप्टिक, एंटीवायरल, एंटीपायरेटिक, एंटी अल्सर और एंटी फंगल होते हैं जो सीधे तौर पर मानव स्वास्थ्य से जुड़ा है। इसे ध्यान में रखते हुए सहकारिता क्षेत्र की दिग्गज कंपनी इफको ने न केवल देश भर में नीम के ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने, बल्कि इस पर शोध कराने का फैसला किया है। इफको देश के विभिन्न हिस्सों में पिछले वर्ष नीम के 13 लाख पौधे लगवाए गए थे। इस वर्ष इसके 26 लाख पौधे लगाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नीम की एक ऐसी किस्म विकसित की गई है जिसमें निमौली पांच-छह वर्ष में लगनी शुरू हो जाती है, जबकि इससे पहले नीम के पेड़ में दस साल में फल लगने शुरू होते थे।

हर तरह से फायदेमंद है नीम

- नीम का पेड़ पर्यावरण और वातावरण के लिए फायदेमंद है।
- किसानों के लिए आय का साधन बन सकता है।
- इफको किसानों से 15 रुपए प्रति किलो की दर से निमौली की खरीदती है।
- वर्षा की स्थिति, उर्वराशक्ति, पर्यावरण की स्थिति के अनुरूप नीम में फल लगते हैं।
- पूरी तरह से विकसित नीम के एक पेड़ में 30 से 100 किलो तक फल लगते हैं।
- 50 किलो फल से 30 किलो बीज मिलता है जिससे छह किलो तेल और 24 किलो खली निकलती है।
- नीम में 100 से अधिक विशेष जैविक यौगिक तत्व पाए जाते हैं, जिसका उपयोग कृषि, पशुपालन, जनस्वास्य और प्रजनन शक्ति बढ़ाने में किया जा सकता है।
- दवा उद्योग और दवाओं के में भी नीम का इस्तेमाल किया जाता है।
- टूथपेस्ट और सौंदर्य प्रसाधन में भी इसका उपयोग होता है।
- पशुओं के दवाओं का निर्माण भी इससे होता है।
- कृषि में जैविक कीटनाशक बनाने, यूरिया को नीम लेपित करने, जैविक खाद और नाइट्रोजन के नुकसान को कम करने में यह उपयोगी है।

आर्य समाज राजपुरा टाउन पंजाब में पदाधिकारियों द्वारा आचार्य जी का सम्मान।

आर्य समाज करनाल सेक्टर-13 में आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी को सम्मानित करते हुए आर्य समाज के पदाधिकारीगण।

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थाश्रम नोएडा

का

भव्य वार्षिकोत्सव

बुधवार दिनांक 05 से रविवार 09 दिसम्बर 2018

स्थानः बी-69, सैक्टर-33, नोएडा

दूरभाष-01202505731, 4206693, 9899379304, 9871798221

धर्मानुरागी सज्जनों एवं देवियों! प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्यसमाज नोएडा के प्रांगण में वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यों का विशाल मेला लग रहा है। इस अवसर पर मूर्धन्य विद्वानों, सन्यासियों एवं आर्य नेताओं के विचार एवं भजनोपदेशकों के मधुर भजन श्रवण करने को मिलेंगे। अतएव विनम्र प्रार्थना है कि इस अविस्मरणीय आध्यात्मिक आनन्द के लिए अवश्य पधारें।

कार्यक्रम

प्रभात फेरी	: बुधवार 5 से शनिवार 8 दिसम्बर 2018 प्रातः 5.30 बजे से 6.15 बजे तक नोएडा के विभिन्न क्षेत्रों में
ऋग्वेद पारायण महायज्ञ	: बुधवार 5 से शनिवार 8 दिसम्बर 2018 प्रातः 7.00 से 8.00 बजे तक यज्ञब्रह्मा-आचार्य जयेन्द्र कुमार, ऋत्विक-श्रीमती गायत्री मीना, श्री मोहन प्रसाद आर्य
वेदकथा	: डा. महावीर अग्रवाल (पूर्व कुलपति- देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार) बुधवार 05 से शनिवार 08 दिसम्बर 2018; प्रातः 8.30 से 9.15 बजे तक तथा सांय 8 से 9 बजे तक; वेदपाठी-आर्ष गुरूकुल नोएडा
भजन प्रस्तुति	: श्री दिनेश आर्य 'पथिक' 5 दिसम्बर से 8 दिसम्बर प्रातः 8.00 से 8.30 बजे तक, सांय 7 से 8 बजे तक
आर्य महिला सम्मेलन	: 8 दिसम्बर शनिवार दोपहर 3 से 5.30 बजे तक
सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन	: 8 दिसम्बर शनिवार सांय 6.30 से 8 बजे तक
राष्ट्र भक्ति एवं क्रान्तिकारी गीतों का कार्यक्रम	: 8 दिसम्बर शनिवार सांय 8 से 9 बजे तक
101 कुण्डीय विश्व शान्ति सौहार्द महायज्ञ	: 9 दिसम्बर रविवार 2018 प्रातः 8 से 9 बजे तक
मुख्य समारोह	: 9 दिसम्बर रविवार 2018 प्रातः 9.30 से 1.30 बजे तक **महर्षि दयानन्द उपकार एवं गुरुकुल एवं बलिदान सम्मेलन**

"सम्मान, धन्यवाद, शान्तिपाठ एवं ऋषिभोज"

आमंत्रित सन्यासीवृन्द, विद्वान् एवं आर्य नेता

स्वामी आर्यवेश जी-अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, स्वामी श्री ठा. विक्रम सिंह जी- राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, श्री सुनील चौधरी सपा नेता, श्री माया प्रकाश त्यागी, डा. अमिता चौहान-चेयरपर्सन एमिटी शिक्षण संस्थान, श्री आनन्द चौहान-निदेशक, एमिटी शिक्षण संस्थान, श्री डी.के. गर्ग, स्वामी विश्वानन्द जी, डॉ. शशि प्रभा कुमार पूर्व उपकुलपति सांची विश्वविद्यालय एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्ष संस्कृत अकादमी दिल्ली, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मंत्री-उ०प्र० प्रतिनिधि सभा, डॉ महेश विद्यालंकार-सुविख्यात वैदिक प्रवक्ता, डॉ. योगानन्द शास्त्री- पूर्व विधान सभा अध्यक्ष, डॉ. बीरपाल विद्यालंकार, डॉ. बी.एस. चौहान, श्री सुधीर सिंघल-मनोहर लाल सर्राफ एण्ड संस, डॉ. अनिल आर्य-अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, श्री सुधीर मिढ्ढा-उद्योगपति, श्री विनोद बुद्धिराजा-रोटरी क्लब नोएडा, श्री सुधीर वालिया-रोटरी क्लब नोएडा, प्रशासनिक अधिकारी नोएडा

आप सहयोग कर सकते हैं

1. नगद दान राशी अथवा चेक देकर 2. ऋषि लंगर हेतु खाद्य सामग्री एवं घी देकर 3. यज्ञ की संपूर्ण व्यवस्था कराकर 4. कार्यक्रम में आमंत्रित और उपस्थित होकर 5. पधारे हुए सन्यासियों और विद्वानों की सेवा करके 6. प्रतियोगिता में पुरस्कारों को प्रायोजित करके।

- निवेदक -

श्री गायत्री मीना	डॉ० जयेन्द्र कुमार	जितेन्द्र आर्य	ओमवती गुप्ता	रविशंकर अग्रवाल	आदर्श बिश्नोई	आर.एल. लवानिया	संतोष लाल
प्रधान	*प्राचार्य*	*मंत्री*	*प्रधाना*	*उपप्रधान*	*मंत्राणी*	*कोषांध्यक्ष*	*कोषाध्यक्षा*

संरक्षक : श्री आनन्द चौहान (निदेशक, एमिटी शिक्षण संस्थान), ब्रि. अनिल अदलक्खा, श्रीमती सुकेश तायल

(समस्त अधिकारी, कार्यकारिणी, संरक्षक गण एवं सदस्यगण)

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।